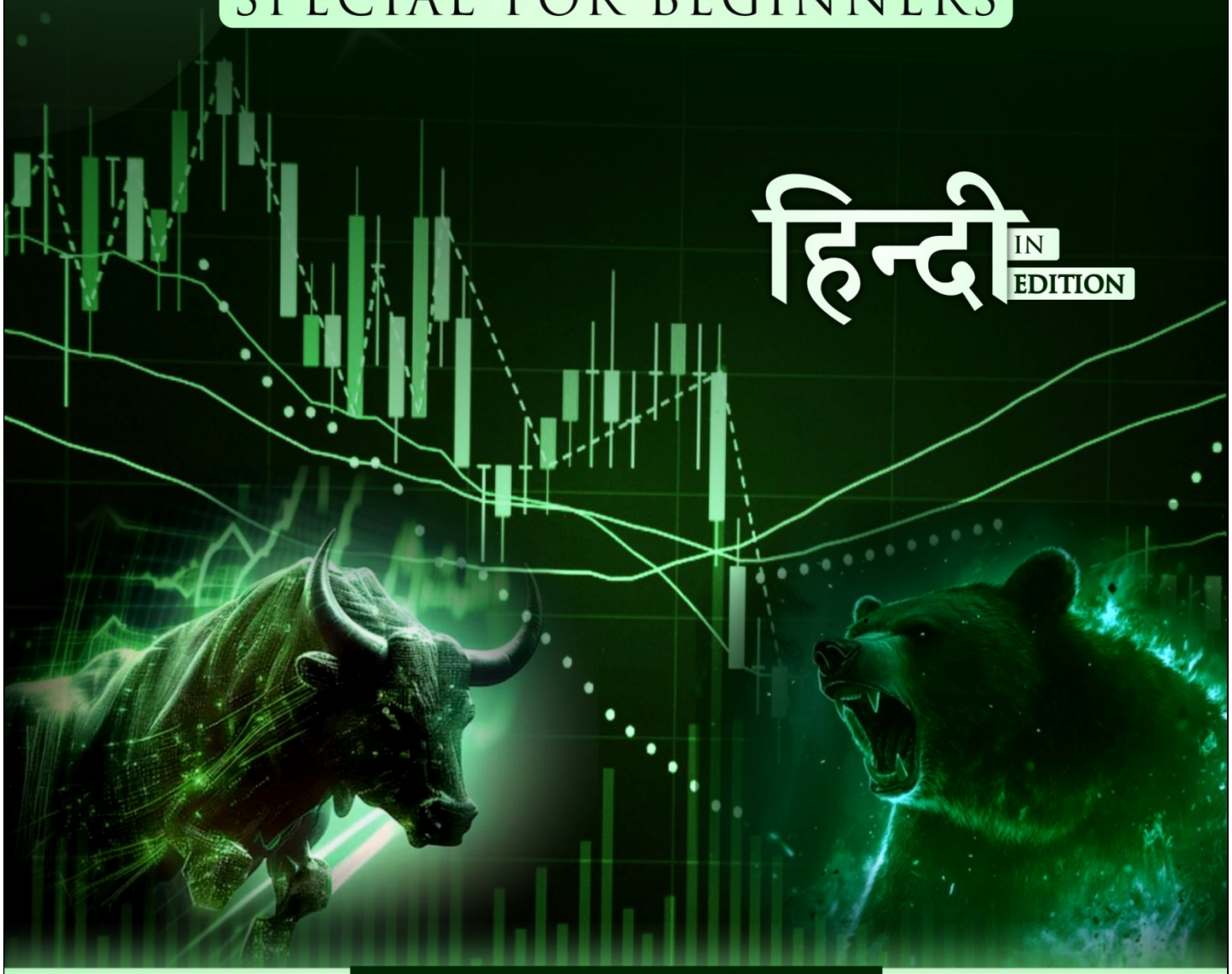
BASIC

# OPTION TRADING

SPECIAL FOR BEGINNERS

हिन्दी IN EDITION



AUTHOR : SUNIL SAHU

web : www.sunilsahu.com

# Disclaimer

इस E-Book को पूरा पढ़ने के बाद किसी भी व्यक्ति द्वारा Option Trading या Investment किया जाता है और परिस्थिति के अनुसार ज्ञान के अभाव में या किसी भी अन्य कारण से किसी भी प्रकार का मुनाफा या नुकसान हो जाने पर मेरा कोई जिम्मेदारी / हिस्सेदारी नहीं रहेगा।

प्रत्येक व्यक्ति को Option Trading या Share Market में निवेश करने से पहले Financial Risk ठीक से समझ लेना चाहिए और स्वयं कि जिम्मेदारी और समझदारी के अनुसार Trade या Invest करना चाहिए।

---

दोस्तों एक Beginners को Option Trading सिखने में बहुत सी मुश्किलें आती है, लेकिन अगर उसे Step-By-Step Guide करने वाला मिल जाए तो Option Trading को सीखना बहुत आसान हो जाता है।

इसलिए मैं इस पूरे E-Book में आपको Option Trading के बारे में Step-By-Step सिखाऊंगा और मुझे पूरा भरोसा है कि इस E-Book को पढ़ने के बाद आप Basic Option Trading अच्छी तरह सीख जायेंगे और यह E-Book आपके Trading Journey को आसान बनाएगी।

**About Author :**



Mr. Sunil Sahu from Chhattisgarh. He is a good author and Social Media Influencer (YouTuber). He is also written a E-Book named “40 Share Market Trading Tips” & “Advance Option Trading”. He is writes articles and create video content on stock market and finance category in hindi. He also has 5 years of Trading Experience.

दोस्तों, इस E-Book के सभी Topics का QR Code दिया गया है, जिसे आप Scan करके उस Topic को पढ़ने के साथ- साथ उसका Video भी देख सकते हैं, जिससे आपको समझने में आसानी होगी।




## QR Code का उपयोग कैसे करें?

- सबसे पहले अपने Mobile में Scanner खोलें।
- दिए गये QR Code को Scan करें।
- Scan करने पर आपको एक Link प्राप्त होगा।
- आप उस Link पर Click करें।
- अब आप सीधे YouTube पर Video देख पाएंगे।

## Contact Us :

Email : sunilsahubusiness@gmail.com

Mob : 7241142314

Web : www.sunilsahu.com

## Social Media :

YouTube | Instagram | Telegram | Facebook | WhatsApp

SunilSahu

# INDEX


| S.N. | Topic Name | Page No. |
|---|---|---|
| 1. | TRADING ROAD MAP (A TO Z) | 6 |
| 2. | TRADING और INVESTMENT क्या होता है ? | 7 |
| 3. | OPTION TRADING क्या है ? | 9 |
| 4. | CONTRACT (अनुबंध )क्या होता है ? | 10 |
| 5. | OPTION CHAIN क्या होता है ? | 11 |
| 6. | OPTION TRADING किसमें- किसमें कर सकते हैं? | 12 |
| 7. | CALL और PUT क्या होता है ? | 12 |
| 8. | OPTIONS का EXPIRY क्या होता है ? | 14 |
| 9. | PREMIUM PRICE (LTP) क्या होता है ? | 16 |
| 10. | OPEN INTEREST (OI) क्या होता है ? | 17 |
| 11. | SPOT PRICE (CMP) क्या होता है ? | 18 |
| 12. | STRIKE PRICE क्या होता है ? | 19 |
| 13. | ITM, ATM, OTM क्या होता है ? | 20 |
| 14. | LONG & SHORT POSITION (BUYING & SELLING) क्या होता है ? | 22 |
| 15. | OPTION TRADING TYPE (INTRADAY-T / DELIVERY-N) | 23 |
| 16. | LOT SIZE क्या होता है ? | 25 |
| 17. | ORDER कितने प्रकार के होते हैं? | 26 |
| 18. | CONVERT ORDER क्या होता है ? | 30 |
| 19. | PRICE ALERT और TECHNICAL ALERT क्या होता है? | 30 |
| 20. | KILL SWITCH FEATURE क्या होता है ? | 31 |
| 21. | TIME DECAY क्या होता है ? | 32 |
| 22. | STOPLOSS, TARGET & TRAILING S.L. क्या होता है ? | 33 |
| 23. | OPTION BUYERS (MAX. PROFIT & LOSS कितना हो सकता है?) | 35 |

24. OPTION SELLERS (MAX. PROFIT & LOSS कितना हो सकता है?) 36

25. OPTION TRADING में CHARGES कितना लगता है? 36

26. VALIDITY (DAY & IOC) ORDER क्या होता है? 37

27. IMPLIED VOLATILITY (IV) क्या होता है? 38

28. PCR VALUE क्या होता है? 38

29. TIME FRAME क्या होता है? 40

30. INTRINSIC VALUE और TIME VALUE क्या होता है? 41

31. BID PRICE, ASK PRICE और SPREAD क्या होता है? 43

32. T-PIN और DDPI क्या होता है ? 44

33. PLEDGE (गिरवी) क्या होता है? 45

34. LEVERAGE और MARGIN क्या होता है? 46

35. HEDGING (बचाव) क्या होता है? 46

36. WATCHLIST क्या होता है ? 47

37. TRADING में 3,5,7 का नियम क्या है? 48

38. RISK & MONEY MANAGEMENT कैसे करें? 48

39. TRADING में RECOVERY MATHEMATICS 51

40. FIB RETRACEMENT क्या होता है ? 53

41. TRAP TRADING क्या होता है? 55

42. INDICATORS कैसे USE करें ? 57

43. STRIKE PRICE SELECT कैसे करें? 64

# Trading Road Map (A to Z)

Trading में Success पाने के लिए पहले Technical और Psychological Skills सीखना जरूरी है। इनमें शामिल हैं- Technical Analysis, Risk Management, Emotion Control और एक अच्छी Trading Strategy बनाना। इन Skill को सीखकर शुरुआती Trader (Beginners) अपने Investing / Trading को बेहतर तरीके से Manage कर सकते हैं।

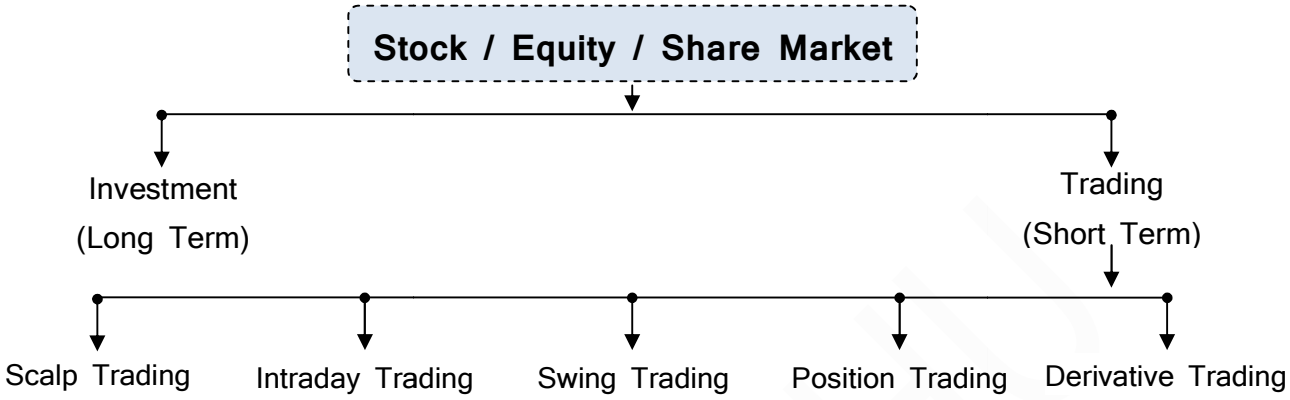
यह Point सबसे Basic है और यह बात सबको मालूम भी होती है, कि कोई भी चीज़ शुरू करने से पहले हमें उस चीज़ के बारे में अच्छे से Knowledge होनी चाहिए। फिर भी जो New Traders होते हैं वे इस Point को Ignore कर देते हैं। अब मैं आपको बताता हूँ कि आपको Trading करने के लिए क्या-क्या चीजें सीखनी चाहिए?

सबसे पहले आपको Stock Market के Basics के बारे में सीखना चाहिए, कि एक Stock क्या होता है? Company उस Stock को Market में क्यों लाती है? IPO क्यों लाया जाता है? एक Stock का Price क्यों बढ़ता और घटता है? Investment और Trading के बीच फर्क क्या होता है? Market में कितने तरह के Investments होते हैं? अब आपको यह सीखना है कि Market में Mutual Funds, ETFs, SIP, Commodity, Derivative Market और Demat & Trading Account ये सब क्या होते हैं? अब कुछ और जरुरी बातें जो Follow करना चाहिए निम्नानुसार हैं।

- ☑ Demo Account से Practice करें।
- ☑ Demat और Trading Account खोलें।
- ☑ KYC Process पूरी करें।
- ☑ अपने Account में पैसे Add करें।
- ☑ Brokerage और Charges के बारे में जानें।
- ☑ Trading Platform से जुड़ी जानकारी प्राप्त करें।
- ☑ Trading Plan बनायें।
- ☑ Trading शुरू करने से पहले Chart Analysis करना सीखें।
- ☑ Market कि Movement पर नजर रखें।
- ☑ अपनी Risk Capacity के आधार पर Invest / Trade करें।
- ☑ अपनी गलतियों से लगातार सीखते रहें।

# Trading और Investment क्या होता है ?

जो लोग Stock / Equity / Share Market में Beginners होते हैं, उनको ये दो शब्द Trading और Investment बहुत परेशान करते हैं । तो चलिए पहले हम Trading और Investment को समझते हैं -




बहुत से Beginners को Trading और Investing दोनों एक जैसा ही लगता है, जबकि ऐसा बिल्कुल भी नहीं है। इन दोनों में जमीन और आसमान का फर्क होता है, तो चलिए अब हम सबसे पहले 'Investment' के बारे में जानते हैं-

**Investment :** दोस्तों जो लोग Investment करते हैं, उनको Investor कहते हैं। जो Investor किसी Company के Share को खरीदकर लंबे समय तक के लिए (1 साल से अधिक) Hold करके रखते हैं, उसे हम Investment कहते हैं।

जो अच्छे निवेशक (Investor) होते हैं, वे Buy-Hold-Sell नियम को अपनाते हैं। मतलब किसी Company के Share को Buy करके सालों तक Hold करके रखते हैं और सही Opportunity देखकर Sell कर देते हैं और अच्छा Profit कमाते हैं।

दोस्तों Trading करने के लिए जिस प्रकार Traders Technical Analysis, Chart Reading, Candlestick Pattern आदि देखते हैं, ठीक उसी प्रकार Invest करने के लिए उस Company का Fundamental Analysis किया जाता हैं। जिससे Company के Future के बारे में पता चलता है, कि आगे कब तक और कैसा Perform करने वाली है? अगर उसका Fundamental सही (Strong) है, तो Investor उस Company में अपना पैसा Invest करते हैं, Otherwise नहीं करते हैं।

**Trading :** जो Trading करता है उसे Trader कहते हैं। Trader किसी भी Company के Share को Short Term के लिए Buy या Sell करते हैं। Short Term का मतलब है कि 1 साल से कम समय के लिए Share खरीद करके Hold करना।

जब कोई Trader Trading करता है, तब वह उस Company का Technical Analysis, Chart Reading, Candlestick Pattern, Price Action, Volume और उस Company के बारे में Current News आदि के आधार पर Share Buy या Sell करता है, जो कि Investing के मुकाबले ज्यादा Risky भी होता है।

**Trading के प्रकार :**

1. **Scalp Trading :** अगर कोई Trader किसी Company के Share या Derivative Contract को Buy या Sell करके कुछ Second से लेकर कुछ मिनट के लिए Hold करता है और Profit / Loss लेकर तुरंत ही बेंच देता है, तो इस प्रकार के Trading को Scalp Trading कहते हैं।

2. **Intraday Trading :** अगर कोई Trader किसी Company के Share को एक दिन के लिए, मतलब पूरे दिन में किसी भी समय Buy करके उसी दिन Market Close होने से पहले Sell कर देता है, तो इस प्रकार के Trading को Intraday Trading कहते हैं।

3. **Swing Trading:** अगर कोई Trader किसी Company के Share को खरीदकर कुछ दिन या कुछ हफ्तों के लिए Hold करके बेचता है और एक Swing को Capture करता है, तो इस प्रकार के Trading को Swing Trading कहते हैं।

4. **Position Trading :** अगर कोई Trader किसी Company के Share को Buy करके कुछ महीनों या एक साल से कम के लिए, Hold करने के बाद बेचता है, तो इस प्रकार के Trading को Position Trading कहते हैं।

5. **Derivative Trading :** दोस्तों यह Trading आम-तौर पर बाकि Trading से बिल्कुल अलग है और यह काफी Risky भी होता है। Derivative Trading दो तरह के होते हैं - Future Trading और Option Trading, तो हम आगे इस पूरे Course में Basic Option Trading Skills को सिखेंगे।

# Option Trading क्या है ?

दोस्तों इस Article में सिखते हैं, कि Option Trading क्या होता है? जैसा कि आपको इसके नाम से ही पता चलता है कि ऐसा Trade जिसमें हमारे पास किसी Future के लिए किए गए वायदे (Contract) को पूरा करने या ना करने का विकल्प (Option) हो, इसे Option Trading कहते हैं।

चलिए इसको एक उदाहरण से समझते हैं, मान लिजिए किसी Company के Share का अभी Current Price 100रू. चल रहा है और आप उस Company के 50 Share के लिए 200रु. Premium (बयाना / Advance) देकर 1 सप्ताह / महीना के बाद 100रु. में ही खरीदने का वायदा कर दिया है। अब देखो आपका 50 Share × 100 Price = 5000रु. का है, लेकिन अभी आपके पास इतने पैसे नहीं है और आपको लगता है, अगले सप्ताह / महीने इसका Price 100 से बढ़कर 160 हो जाएगा, इसलिए आप 200रु. का Premium देकर सामने वाले को बाध्य कर रहे हो कि "अगले सप्ताह / महीना मुझे यह Share 100 रु. के भाव में देना।"

वहीं बेंचने वाला को लगता है कि इसका Price 100रु. से गिरकर 60रु. हो जाएगा इसलिए बेचने वाला आपसे यह Contract कर रहा है।

अब मान लेते हैं कि इस Company के Share का Price अगले सप्ताह / महीना चाहे कितना भी रहे (बढ़े या घटे) आपके पास यह स्वतंत्र अधिकार है, इस Share को लेने या ना लेने का।

अब मानलो कि अगर इस Company के Share का Price 100रु. से बढ़कर 160रु. हो जाता है, तब तो आप खरीद लेंगे, क्योंकि आपको यह Share इस वक्त 100रु. के Price में मिल जाएगा और फिर आपको 50 Share के हिसाब से 50×60 =3000रु. का Profit हो जाएगा, मतलब 200रु. का Premium देकर 3000रु. का Profit कमा लिया।

लेकिन अगर उस Company के Share का Price अगले सप्ताह / महीना बढ़ने के बजाय गिरकर 60 रु. हो जाता है, तब आप उस Company के Share को नहीं लेंगे, आप बोलेंगे कि "200 रु. डूब जाए तो ही ठीक है।" क्योंकि अगर आप Buy करते हो तो 40रु. per Share आपको नुकसान होगा, क्योंकि अभी Price गिरकर 60रु. हो गया है, मतलब 50 Share X 40रु. का गिरावट = 2000रु. का नुकसान होगा, लेकिन अगर आप यह Share नहीं लेते हो तो सिर्फ़ आपका 200रु. Premium डूबेगा और 2000रु. का बड़ा Loss होने से बच जाओगे।

मतलब Premium देने से आपके पास एक विकल्प (Option) रहता है, उस Share को खरीदने या ना खरीदने का। इसलिए इस प्रकार के Trading को Option Trading कहते हैं और Option Trading का यही Features लोगों को बहुत ज्यादा आकर्षित करता है।

## Contract (अनुबंध )क्या होता है ?

दोस्तों जैसा कि आपने पिछले Article में कई बार Contract शब्द सुना होगा, तो चलिए जानते हैं कि आखिर Contract क्या होता है?

दोस्तों "Contract" दो व्यक्तियों या कंपनियों के बीच होता है। Option Trading में Option Buyers और Option Sellers के बीच भी Contract होता है। Option Trading में अलग-अलग Strike Price पर Call और Put दोनो तरफ बहुत सारे Contract होते हैं, इस Contract कि Validity अधिकतम 3 महीने तक का रहता है। जिसको हम क्रमश: Current Month, Next Month और For Month Contract कहते हैं।

जैसे अभी January चल रहा है तो January के सभी Contract को "Current Month Contract", इसी प्रकार February के Contract को "Next Month Contract" और March के Contract को "For Month Contract" कहते हैं।

अब अगर हम किसी ABC Company में F&O करने के लिए 25 January के Expiry का 1250 के Strike Price का Call Option खरीदते हैं, तो हम इसको कहेंगे कि Current Month के लिए "ABC 25 Jan 1250 CE" Contract Buy किया हूँ।

इसको हम इस तरह से भी लिख सकते हैं -

Company Name : ABC
Strike Price : 1250
Option Type : CE (Call)
Expiry Date : 25 Jan
Position : Long

और अगर यहीं पर Option Selling करते, तब Position में Long के जगह Short लिखते।

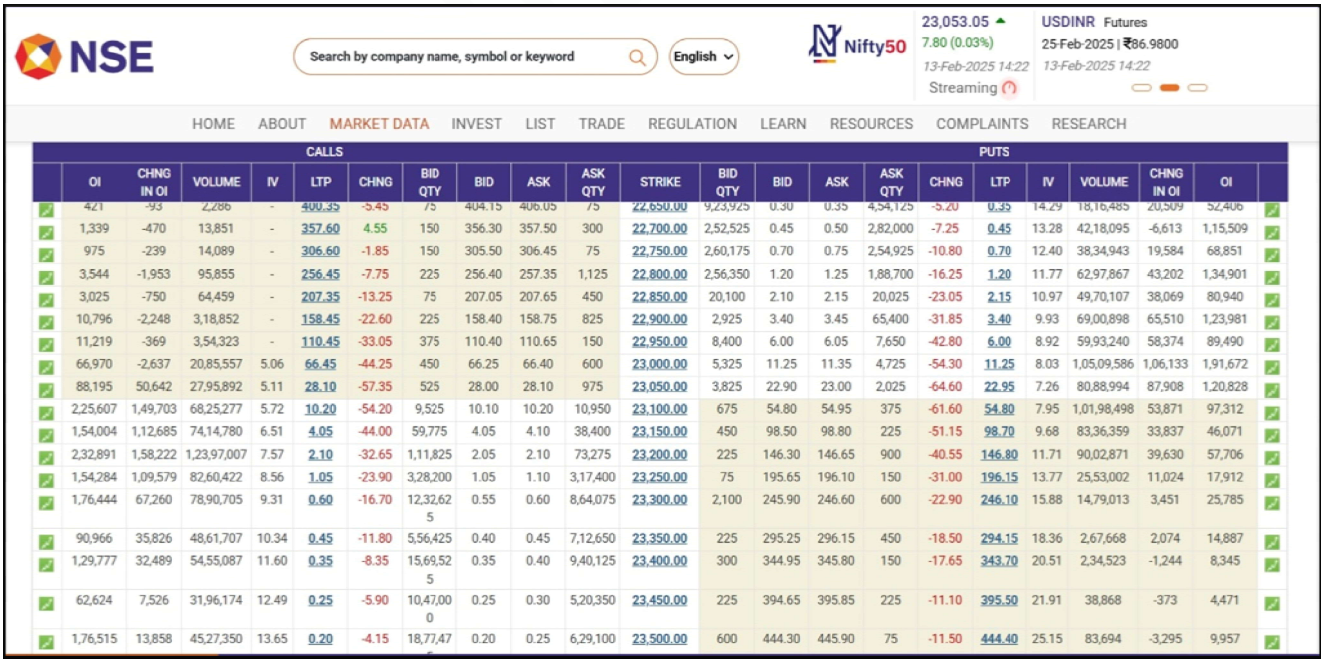
# Option Chain क्या होता है ?

दोस्तों पिछले Article में आपने Contract के बारे में पढ़ा, अगर Contract समझ में आ गया, तो चलिए अब Option Chain को समझते हैं।

दोस्तों Basically बहुत सारे Option Contract के Strike Price से मिलकर Option Chain बनता है। इस Option Chain कि मदद से आप किसी भी Index या Stock के Option Chain में हर एक Strike Price पर बहुत सारी जानकारियाँ देख सकते हैं, जैसे कि Premium, Strike Price, Open Interest, IV, LTP, Volume, Spot Price, Bid & Ask Price, Option Greeks, PCR Value, COI...आदि के बारे में जान सकते हैं।

ज्यादातर Trading Broker अपने हि Platform पर Option Chain देते हैं, लेकिन वहां सिर्फ़, कुछ Limited Information ही Available रहता है। जैसे कि LTP, Premium, Strike Price, Spot Price और OI ही देखने को मिलता है।

इसलिए अगर आपको Option Chain देखना हो, तो NSE Exchange के वेबसाइट www.nseindia.com पर जाकर देखें। यहाँ पर आपको Option Chain का पूरा जानकारी मिलता है।



# Option Trading किसमें- किसमें कर सकते हैं?

दोस्तों पिछले Article में आपने Option Chain के बारे में पढ़ा, तो चलिए अब जानते हैं कि हम Option Trading किसमें कर सकते हैं।

दोस्तों Option Trading किसी Index या Stocks में कर सकते हैं, जैसे कि Nifty 50 या Bank Nifty में, जो काफी Popular है। इसके अलावा और भी Index होते हैं, जैसे- Fin Nifty, Midcap Nifty, Sensex, Bankex....आदि।

और अगर Share में Trade करना चाहते हैं तो पहले आपको यह देखना होगा कि कौन-सा Share Derivative Market में Listed है, क्योंकि Option Trading करने का Option सभी Company के Shares में नहीं होता है। ज्यादातर नए Company के Shares Derivative Market में Listed नहीं होते हैं, तो ये पहले Check करना होगा।

- ज्यादातर लोग Share में Trade करने के बजाय Index में Trade करना पसंद करते हैं, क्योंकि इसमें Liquidity Shares के मुकाबले ज्यादा होता है।

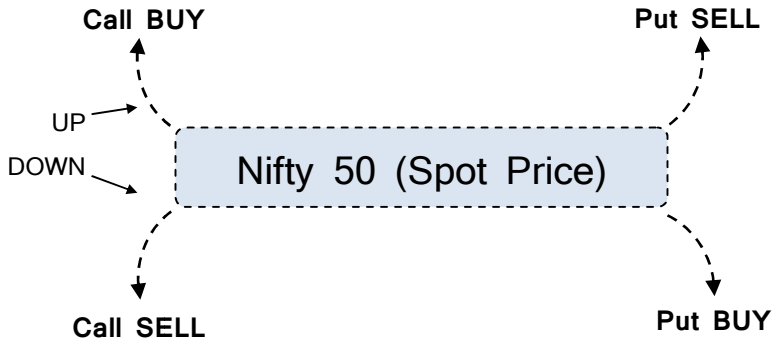
# Call और Put क्या होता है ?

दोस्तों Option Trading करते समय आपने Option Chain में, दो Option **Call (CE)** और **Put (PE)** जरूर देखा होगा, जो कि Option Chain में Strike Price के Left Side Call और Right Side में Put होता है।

Call और Put दोनों में आप Buy और Sell कर सकते हैं, लेकिन Option Sell में बहुत ज्यादा पैसे का जरूरत पड़ता है, इसलिए Beginners Option Buy करने में ज्यादा Interest दिखाते हैं।

तो चलिए अब Option Buy और Sell दोनों के बारे में Detail में समझते हैं-

Example -



दोस्तों ऊपर चित्र में मैं Nifty 50 का उदाहरण मानकर चल रहा हूँ।

Note : Call Option को 'CE' और Put Option को 'PE' भी कहा जाता है।

**Call BUY:** दोस्तों हम Call Option Buy तब करते हैं, जब हमको Market के Analysis के बाद यह पता लगे, कि अब Market ऊपर जायेगा या Market में तेज़ी आने वाला है।

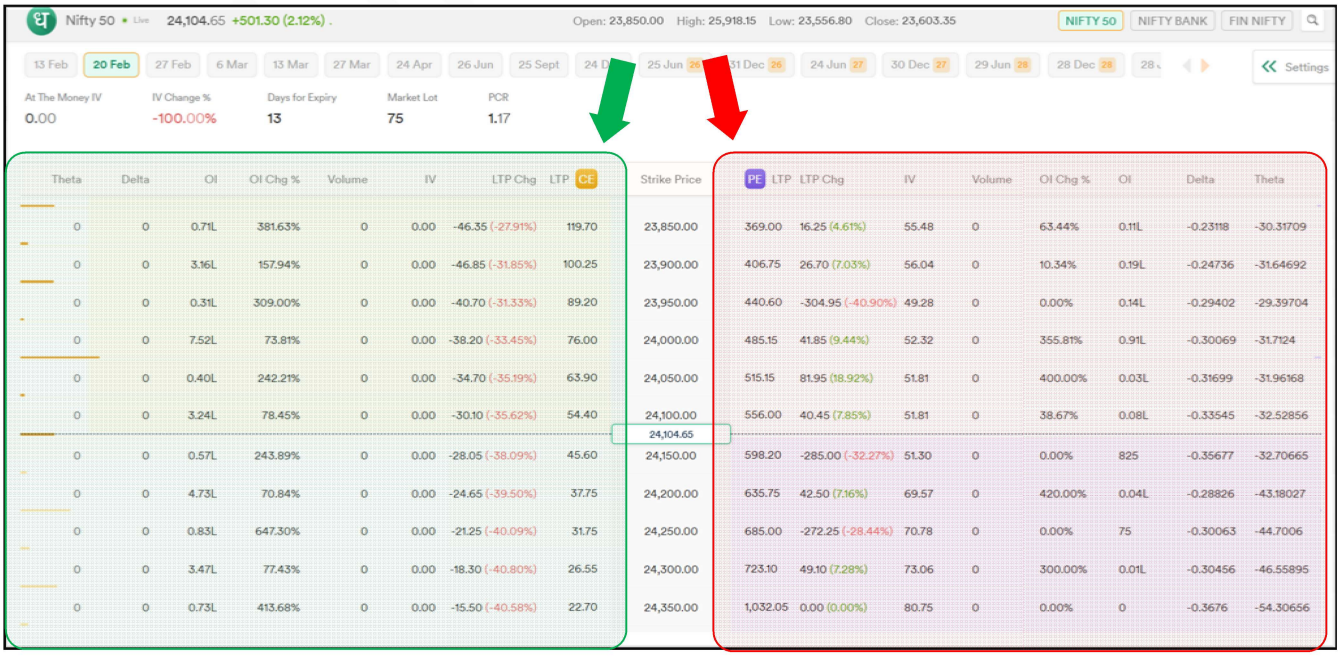
**Call SELL:** दोस्तों हम Call Option Sell तब करते हैं, जब हमें Market के Analysis के बाद यह लगे कि अब Market Side Ways रहेगा या नीचे गिरेगा।

**Put BUY:** दोस्तों हम Put Option Buy तब करते हैं, जब हमें Market के Analysis के बाद यह लगे, कि अब Market नीचे गिरेगा।

**Put SELL:** दोस्तों हम Put Option Sell तब करते हैं, जब हमें Market के Analysis के बाद यह लगे, कि Market अब Side Ways रहेगा या ऊपर जाएगा।

- अब इसे आसान शब्दों में समझिए-

1. Call Buy - Market (Bullish) तेज़ी
2. Call Sell - Market (Side-ways or Bearish)
3. Put Buy - Market (Bearish) मंदी
4. Put Sell - Market (Side-ways or Bullish)



# Options का Expiry क्या होता है ?

दोस्तों जब आप किसी Stock या Index का Option Chain Open करते हैं, तो उस Option Chain के ऊपर में आपको एक Fix Date दिखाई देता है, जिसे हम Expiry Day कहते हैं। इस Expiry Date तक आप उस Option Chain के अंदर मौजूद किसी भी Contract को Buy या Sell कर सकते हैं।

यह सारे Contract सिर्फ Expiry Date तक ही Valid रहते है। Expiry Date दो प्रकार के होते हैं- Monthly तथा Weekly. Monthly Expiry उसे कहा जाता है, जो महीने में एक बार होती हो और Weekly Expiry उसे कहा जाता है जो Week में एक बार Expire होता हो।

जैसे Bank Nifty, Fin Nifty, Bankex, Midcap Nifty और सभी Stocks में Monthly Expiry होता है। यह हर महीने में एक बार Expire होता है। वहीं Nifty 50 और Sensex में Weekly Expiry होता है, यह हर Week में एक बार Expire होता है।

| Monthly Expiry | | Weekly Expiry | |
|---|---|---|---|
| Name | Day | Name | Day |
| Fin Nifty | Thursday | Nifty 50 | Thursday |
| Bank Nifty | Thursday | Sensex | Tuesday |
| Midcap Nifty | Thursday | | |
| Nifty Next 50 | Thursday | | |
| All Stock | Thursday | | |
| Bankex | Tuesday | | |
| Sensex 50 | Tuesday | | |

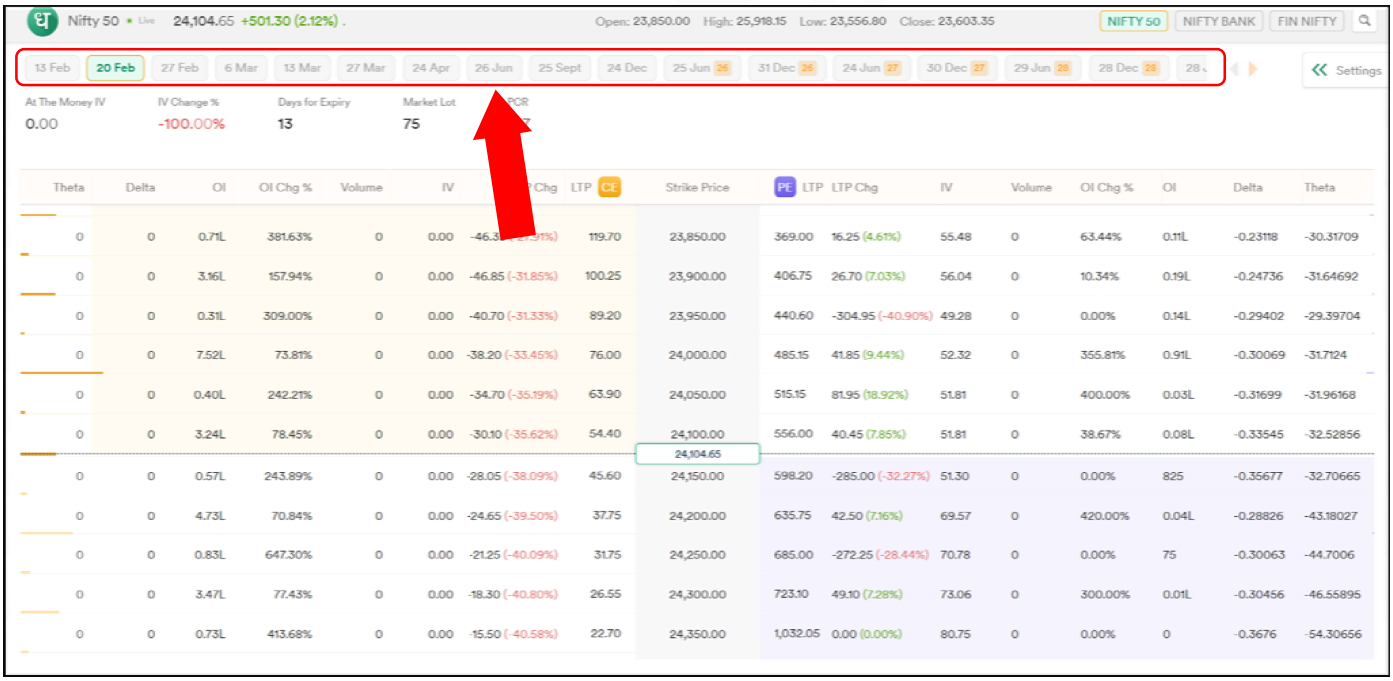
Fin Nifty, Bank Nifty, Midcap Nifty और सभी Stock का Expiry, Month के Last Thursday को होता है, यदि Thursday को Market किसी कारण से बंद हो तो वह Expiry से एक दिन पहले यानी कि Last Wednesday को Expire हो जाएगा।

Bankex, Sensex 50 का Expiry Month के Last Tuesday को होता है और यदि Tuesday को कोई छुट्टी पड़ जाए, तब इसका Expiry एक दिन पहले Monday को ही हो जाता है।

इसी प्रकार Nifty 50 में Weekly Expiry हर हफ्ते Thursday को होता है और यदि Thursday को कोई छुट्टी पड़ जाए तब इसका भी Expiry एक दिन पहले Wednesday को ही हो जाता है।

इसी प्रकार Sensex में भी हर हफ्ते Tuesday को Weekly Expiry होता है और यदि Thursday को कोई छुट्टी पड़ जाए तब इसका Expiry एक दिन पहले Monday को ही हो जाता है।

Option Expiry के दिन OTM और ATM Option Contract के Value Zero यानी समाप्त हो जाते हैं और जो Option Contract ITM में होते हैं उसमे सिर्फ़ Intrinsic Value हि रह जाता है और उनका Physical Settlement किया जाता है।



# Premium Price (LTP) क्या होता है ?

दोस्तों Premium को ही LTP यानी कि Last Traded Price कहते हैं। जब हम Call या Put Option खरीदते हैं, तब हर एक Strike Price के Option का कुछ कीमत चुकाना पड़ता है, उस कीमत को Premium कहते हैं।

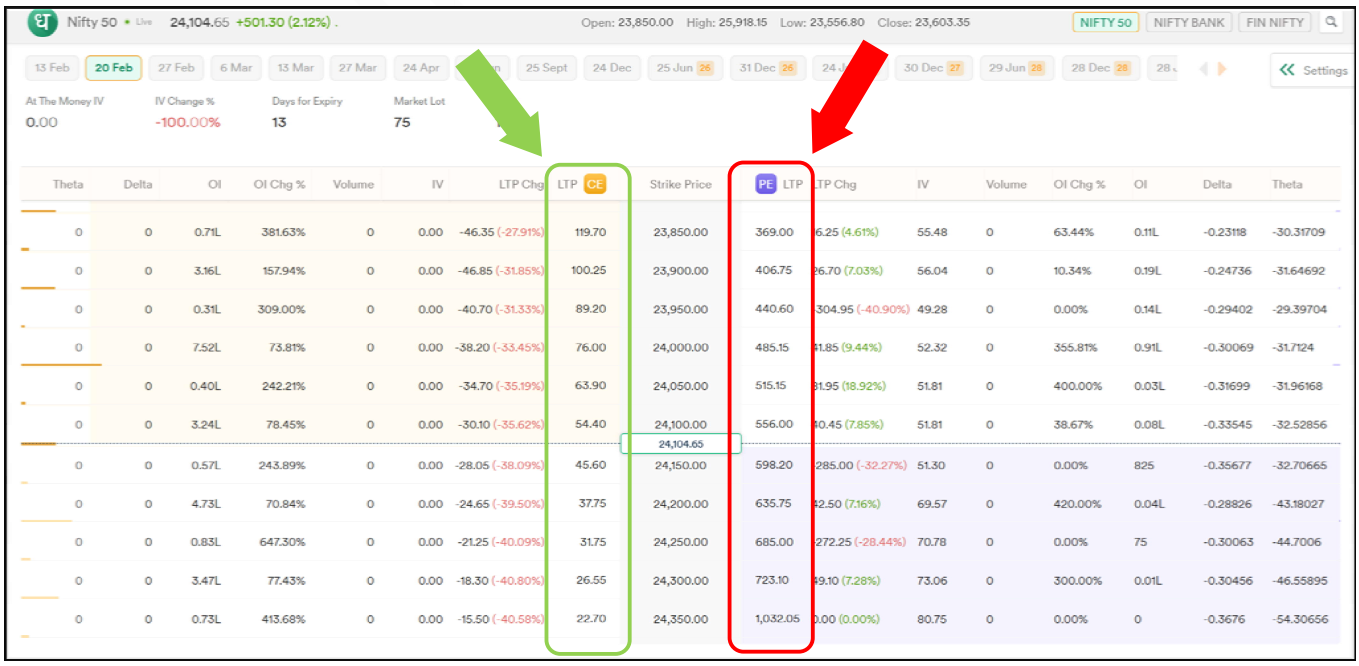
Option Chain में हर एक Strike Price का अलग-अलग कीमत होता है। अब कोई Option जितना ज्यादा Spot Price से अंदर (ITM में) होगा, उतना ज्यादा महंगा होगा और Spot Price यानी कि ATM पर Price कुछ कम रहता है। फिर Spot Price से जितना ज्यादा बाहर (OTM में) रहेगा उसका Price उतना ही कम होता जाएगा।

हर एक Strike Price का Premium बढ़ेगा या घटेगा, यह पूरी तरह Market के ऊपर निर्भर करता है। "Call Option में अगर Market बढ़ता है, तब Premium का Price बढेगा और अगर Market गिरता है तो Premium भी गिरेगा"।

लेकिन इसके विपरित Put में Market गिरने पर Premium बढ़ेगा, और Market बढ़ने Premium गिरेगा।

**Note:** Call हो या Put दोनों का Premium समय के साथ घटता जाता है। इसके बारे में हम आगे "Time Decay' वाले Topic में पढ़ेंगे।

Note: Premium (LTP) = (Intrinsic Value + Time Value)



# Open Interest (OI) क्या होता है ?

दोस्तों Open Interest वह संख्या है, जो हमें यह बताती है कि Market में इस समय Option Trading में कितने Contract अभी तक बंद नहीं किए गए हैं। यानी कि हर Trade में दो तरह के लोग होते हैं। एक Option बेचने वाला (Option Seller) और दूसरा उस Option को खरीदने वाला (Option Buyer)।

मतलब Open Interest (OI) Contract कि कुल संख्या है, जो Market में पैसे के प्रवाह को मापता है।

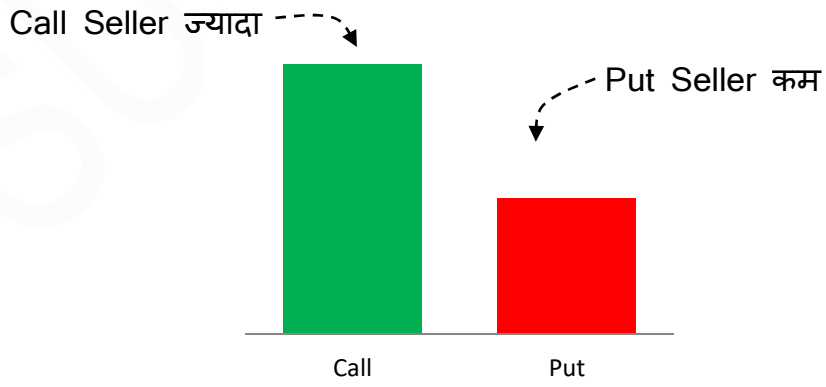
और इसी के आधार पर हम PCR निकाल के Market के Direction का पता लगाते हैं, कि Market में तेजी होगा या मंदी होगा। PCR के बारे में हम आगे Detail में पढ़ेंगे।

Example - मान लो किसी दिन 5 Traders, 10 Lot का Contract रखते हैं, तो उस दिन के लिए उस Option का Open Interest 10x5 =50 होगा। OI प्रतिदिन Change होता रहता है और हर समय Change होता रहा है।

यदि हम OI Data को Option Sellers (Big Player) के नजरिए से देखें, तो Market का सही दिशा Predict करने कि Probability बढ़ जाती है।

**OI Data:-**

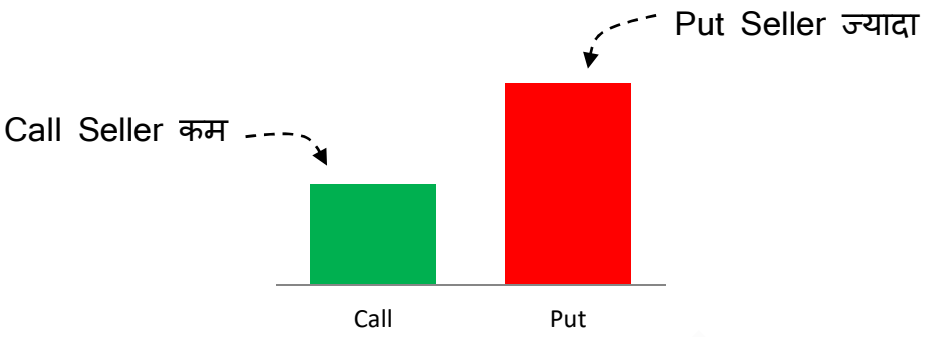
**Graph -1**




इसमें Call ज्यादा Sell किया जा रहा है, मतलब Big Players (Option Sellers) का View है कि Market Bearish हो सकता है।

**OI Data:-**

**Graph -2**




इसमें Put ज्यादा Sell किया जा रहा है, मतलब Big Players (Option Sellers) का View है कि Market Bullish हो सकता है।

**Bullish Market (तेजी) :-**

- यदि Put Option में OI बढ़ रहा हो।
- यदि Call Option में OI घट रहा हो।

**Bearish Market (मंदी) :-**

- यदि Put Option में OI घट रहा हो।
- यदि Call Option में OI बढ़ रहा हो।

## Spot Price (CMP) क्या होता है ?

दोस्तों किसी भी Stocks या Index का मौजूदा Price, जो अभी तत्काल में चल रहा हो उस Price को हम Spot Price या Current Market Price कहते हैं। Spot Price उस Stock या Index का Market में चल रहे Current Price को बताता है तो चलिए अब हम इसे एक उदाहरण से समझते हैं।

**Example :** मानलो अभी Nifty 50 का Current Price= 24,104.65 रू. चल रहा है, तो इसका मतलब है कि Nifty 50 का Spot Price 24,104.65 रू. कहा जाएगा।

जब Market Open रहता है, तब हर एक Share और Index का Spot Price लगातार बदलता (बढ़ता / घटता) रहता है।

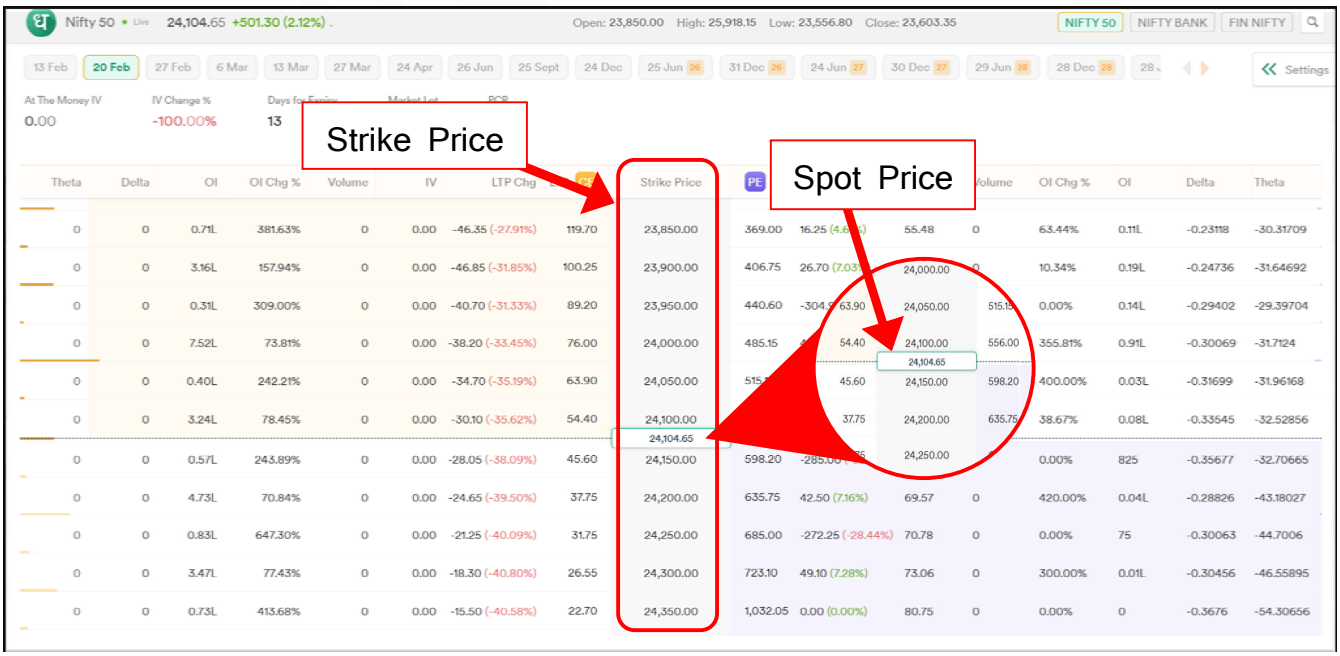
# Strike Price क्या होता है ?

Option Trading करने से पहले हमें Strike Price के बारे में पता होना बहुत जरूरी होता है, तो चलिए हम इस Article में Strike Price को जानते हैं।

दोस्तों आपने देखा होगा कि Option Chain के ठीक बीच में एक Fix Point के अंतराल में एक Column बना होता है। जिस Price पर किसी Contract (Option) को Buy या Sell किया जाता है उसे हम Strike Price कहते हैं। इसे किताबी भाषा में Exercise Price भी कहा जाता है, लेकिन हम इसे Strike Price के नाम से जानते हैं। किसी Share के Option का Strike Price लगभग 10, 15, 20, 25 आदि के अंतराल में एक नियमित क्रम में लगे होते हैं।

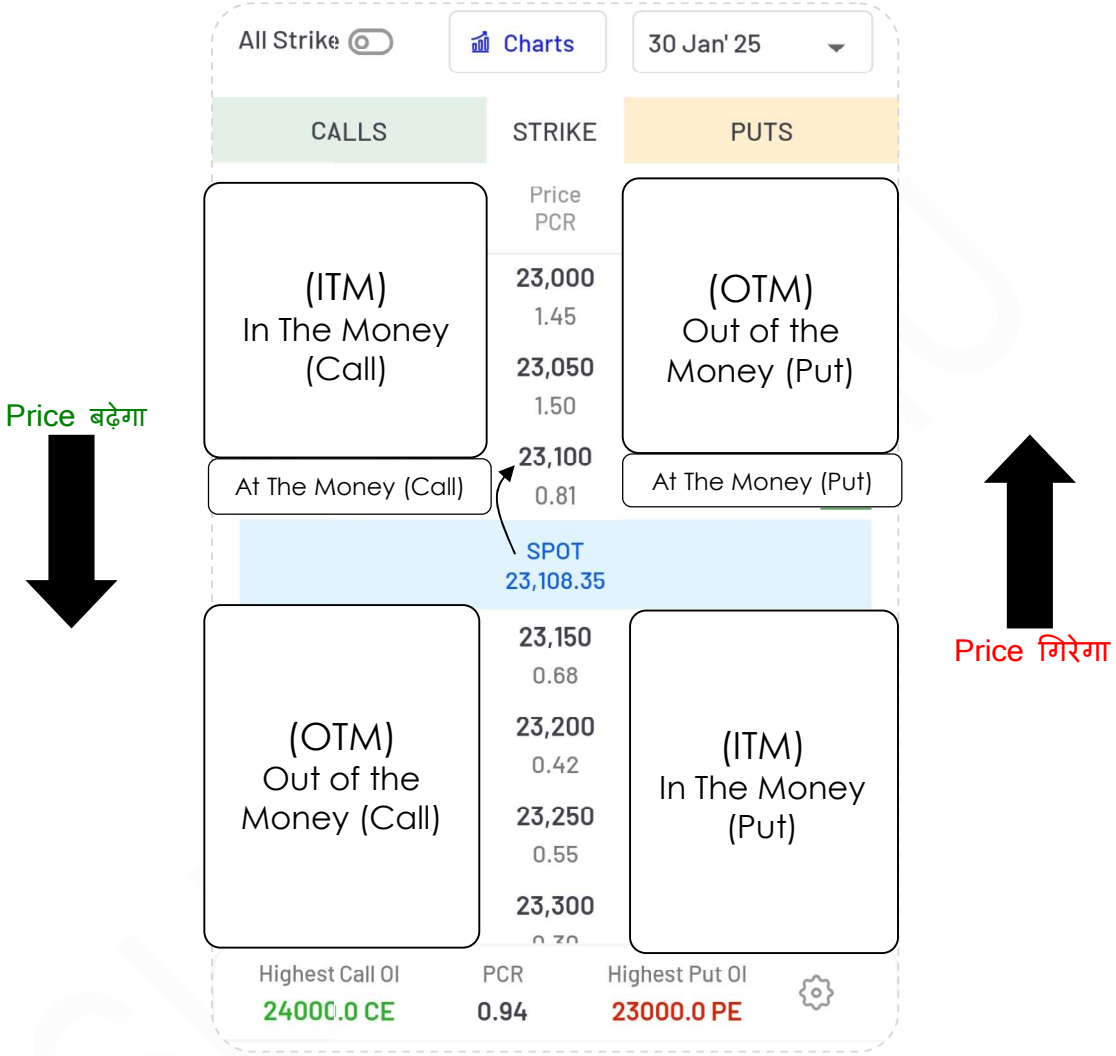
**Example:** अगर हम Index में Nifty 50 कि बात करें, तो इसके किसी 2 Strike Price के बीच में 50 अंकों का अंतर होता है, वहीं अगर Bank Nifty कि बात करें, तो इसके बीच 100 अंकों का अंतर होता है।

Note: "Share या Index" किसी में भी दो Strike Price के बीच के Fix अंतराल को कम या ज्यादा SEBI के द्वारा किया जा सकता है।



# ITM, ATM, OTM क्या होता है ?

दोस्तों इसको समझने से पहले आपको Spot Price & Strike Price को जानना होगा, जिसे हमने पिछले Article में पढ़ लिया है, तो चलिए अब एक-एक करके ATM, ITM, OTM को समझते हैं।




तो अब दिए गए चित्र को ध्यान में रखते हुए Read किजिए।

**ATM**: Spot Price या Market के Current Price के सबसे नजदीकी Strike Price को ATM (At The Money) कहते हैं।

ATM, Call और Put दोनों के लिए हमेशा समान रहता है। मतलब जो Market के Current Price से सबसे नजदीक Strike Price होगा, जैसे यहाँ पर Current Price - 23108 से सबसे नजदीकी Strike Price 23,100 है, तो वही Call और Put के लिए ATM कहलाएगा।

**ITM:** ITM का Full Form "In The Money" होता है, अब Call Option के लिए Spot Price से कम का Strike Price ITM कहलाता है।

वहीं Put Option के लिए Spot Price से अधिक का Strike Price ITM कहलाता है।

- **एक वाक्य में परिभाषा :** Call या Put दोनो के लिए Market ने जिस Target को Achieve कर लिया है, उस Strike Price को **ITM** कहते हैं।

<u>चित्र देखें</u> :- मतलब Call के लिए Market बढ़ना चाहिए। इसका मतलब साफ है कि चित्र में 23,100 के नीचे का Price Achieve हो गया है और 23150, 23200... कि तरफ जाने वाला है। तो इसमें Call के लिए 23,100 के नीचे का Price जैसे- 23050, 23000, 22950... ये सब ITM में आएगा।

और Put के लिए Market गिरना चाहिए, इसका मतलब चित्र में 23,100 के ऊपर का Price जैसे- 23150, 23200..... ये सब Achieve हो गया है और अब 23000, 22950... कि ओर जाने वाला है, तब यह Achieve किया हुआ Strike Price ITM कहलाता है।

(ध्यान रहे इसे Option Buyers के दृष्टिकोण से लिखा गया है।)

**OTM:** OTM का Full Form "Out Of The Money" होता है, अब Call Option के लिए Spot Price से उपर का Strike Price OTM कहलाता है।

वहीं Put Option के लिए ठीक इसके विपरित Spot Price से कम का Strike Price OTM कहलाता है।

- **एक वाक्य में परिभाषा :** Call और Put दोनो के लिए Market जिस Target को अभी तक Achieve नहीं किया है उस Strike Price को **OTM** कहते हैं।

<u>चित्र देखें</u> :- Call के लिए Market बढ़ना चाहिए, मतलब Spot Price 23,100 से अधिक 23150, 23200 कि तरफ जाएगा यानी कि जिस Strike Price तक अभी पहुंचा नहीं है जैसे- 23150, 23200, 23250, 23300... आदि OTM कहलाता है।

वहीं Put के लिए Market गिरना चाहिए। मतलब Spot Price 23,100 से कम यानी 23050, 23000 कि तरफ जाएगा, मतलब जिस Strike Price तक अभी पहुंचा नहीं है जैसे- 23050, 23000, 22950...आदि OTM कहलाता है।

# Long & Short Position (Buying & Selling) क्या होता है ?

दोस्तों जब हम Option Trading और Intraday Trading करते हैं, तब हमें अक्सर Short & Long शब्द सुनने को मिलता है, तो आइए इस Article में इसको गहराई से समझते हैं-

**Short Selling / Short Position :** इसका मतलब होता है किसी Share को खरीदने से पहले ही बेंच देना, यानी कि पहले महंगे Price पर बेचते हैं फिर बाद में कम Price पर खरीद लिया जाता है। ऐसा तब किया जाता है जब Market में गिरावट हो रहा हो या Down Trend में चल रहा हो।

**Exmple:-** मानलो SBI के Share का Price बढ़कर 570रु. हो गया है और हमें लगता है कि अब इसके Share का Price गिरने वाला है, तब ऐसे Case में Short Selling किया जाता है।

यदि 570रु. में Short करते हैं और बाद में इसका Price वास्तव में गिरता है और 550रु. हो जाता है तब हमें 20रु. per Quantity Profit होगा। अगर 570रु. से बढ़कर 590रु. हो जाता है यानी कि Price बढ़ता है तब 20रु. per Quantity Loss होगा।

**Long Buying / Long Position :** इसमें किसी Company के Share को पहले Buy किया जाता है और बाद में उसे Sell किया जाता है। तब हम इस प्रकार के Trade को Long Buying या Long Position कहा जाता है।

हम इसे कम Price पर पहले Buy करते हैं और अधिक Price पर Sell करते हैं। ऐसा तब किया जाता है, जब उस Share का Price बढ़ने वाला हो या Market Up Trend में हो।

**Exmple:-** मानलो कि SBI का Share Price गिरकर 550रु. हो गया है और हमें लगता है कि इसका Share Price बाद में बढ़ने वाला है, तब ऐसे में Long Position बनाया जाता है।

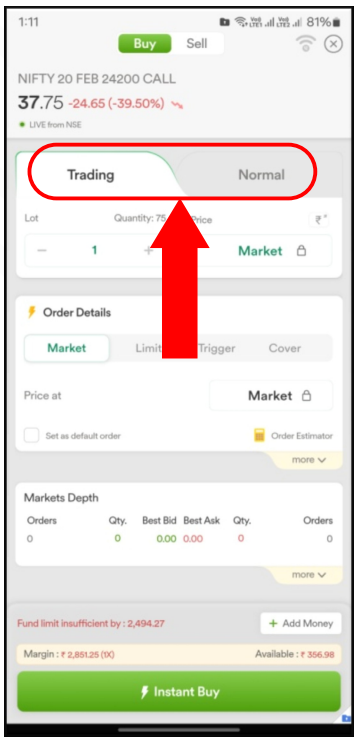
यदि 550रु. में Long Buy करते हैं और बाद में इसका Price बढ़कर 570रु. हो जाता है, तब हमें 20रु. per Quantity Profit होगा और अगर 550रु. से गिरकर 530रु. हो जाता है, यानी Price में गिरावट होती है, तब 20रु. per Quantity Loss होगा।

# Option Trading Type (Intraday-T / Delivery-N)

दोस्तों Share Market में आप किसी में भी प्रकार का Trading करें, चाहे Option Trading या Stock में Trading, ये Basically दो प्रकार के होते हैं, जिसे Intraday और Delivery कहते हैं। तो चलिए अब इनको Detail में समझते हैं-

**Intraday Trading :** Intraday Trading वे लोग करते हैं जो एक ही दिन में मुनाफा कमाने के बारे में सोचते हैं।

दोस्तों Intraday Trading में "एक ही दिन में Share को खरीदते हैं और उसी दिन बेंचते हैं, चाहे फायदा हो रहा हो या नुकसान। तो इस प्रकार के Trading को Intraday Trading हैं, चलिए अब जानते इसके फायदे और नुकसान के बारे में।




## Intraday Trading के फायदे –

(i) आप जो भी Trade करते हैं वो Market (9:15am) Open होने के बाद करते हैं और Close (3:30pm) के बाद बंद कर देते हैं तो ऐसे में Market बंद होने के बाद कोई Risk या Tension नहीं रहता है।

(ii) Intraday में Short Sell करके गिरते हुए Market से भी पैसा कमा सकते हैं।

(iii) इससे आप Margin का उपयोग करके कम पैसे से ज्यादा Trade ले सकते हैं।

## Intraday Trading के नुकसान –

(i) Day Trading में आपको कम समय में कुछ अहम फैसले लेने होते। इसलिए कई बार Trader सही फैसला नहीं ले पाता है और Profit के बजाय Loss कर लेता है।

(ii) कई बार New Traders Margin कि वजह से अपने Risk Capacity से ज्यादा का Trade ले लेते हैं और अक्सर इसी वजह से कई बार बड़ा नुकसान कर लेते हैं।

(iii) Intraday में कई बार New Traders गलत News के आधार पर गलत Share ले लेते हैं और बाद में नुकसान हो जाता है। Share भले ही अच्छा हो लेकिन जिस दिन आप Trade लेते हैं, उस दिन Share के बारे में कोई गलत News आ गया, तो ऐसे में भी नुकसान हो जाता है।

**सावधानियाँ :-**

(i) सही Share का चयन करना।

(ii) Share का Technical Analysis करना।

(iii) Target और Stoploss लगा कर काम करना।

(iv) अधिक लालच से बच के रहना।

**Delivery Trading :** दोस्तों किसी Share में एक बार पैसा लगा देने के बाद उस Stock को अपने Demat Account में दो या दो से अधिक दिन के लिए रखना या Hold करना Delivery Trade कहलाता है।

दोस्तों Delivery वाले Share को अपने Demat खाते में Hold करके रखने कि कोई अधिकतम सीमा नहीं होती है। आप जब तक चाहें तब तक Hold करके रख सकते हैं। Delivery Trading का उपयोग अक्सर Swing या Position Trading और Long Term Investment के लिए किया जाता है।

Delivery Trading करने के लिए Share कि पूरी किमत चुकानी पड़ती है, यानी कि इसमें Margin नहीं मिलता है। साथ ही किसी Share को बिना खरीदे, बेंच नहीं सकते हैं। मतलब आपके Demat Account में Share होंगे तभी आप बेंच सकते हैं।

**Delivery Trading के फायदे –**

(i) इसमें हमें एक ही दिन में Shares खरीदने और बेचने कि मजबूरी नहीं होती, जब तक चाहें तब तक हम इसमें Invested रह सकते हैं।

(ii) अगर हम किसी Company के Share में लंबे समय तक Invested है और वह Company Fundamentally Strong है, तो हमें Compounded Growth कि वजह से बहुत अच्छा Return मिल सकता है।

(iii) कई कंपनियाँ ऐसी होती है, जो अपने Share Holders को Dividend देती है। यह Dividend साल में दो से तीन बार एक Fix Salary के रूप में सीधे बैंक खाते में मिलती है।

**Delivery Trading के नुकसान –**

(i) दोस्तों Delivery Trading में Share को Hold करके Overnight रखने पर Risk रहता है, हो सकता है कि उस Share के बारे में Overnight में कोई गलत News आ जाए, तो ऐसे में आप अपने Share को Market Open होने से पहले बेंच भी नहीं सकते, जिससे बड़ा नुकसान हो सकता है।

# Lot Size क्या होता है ?

दोस्तों जब भी हम किसी Stock या Index में Option Trading करते समय, किसी Contract को खरीदते या बेचते हैं, तब उस Stock या Index को हम Lot में Buy करते हैं। मतलब हम इसमें किसी 1 या 2 Quantity को नहीं खरीद सकते हैं। इसे एक सांथ Bulk में खरीदा जाता है, जिसे हम Lot कहते हैं।

हर एक Share या Index में एक Fix Share कि Quantity होती है। जैसे Nifty 50 में Minimum = 75 Quantity एक Lot में होती है। अगर कोई 60 Quantity खरीदना चाहे तो नहीं खरीद सकता है। कम से कम 75 या उससे अधिक 75 के Multiple में ही खरीद सकता है, जैसे- 75, 150, 225, 300....। तो इसी Minimum 75 Quantity को हम Nifty 50 का Lot Size बोलेंगे।

हर Share या Index का Lot Size अलग- अलग रहता है। और यह lot size SEBI के द्वारा बदला भी जा सकता है। जैसे पहले Nifty50 का Lot Size 25 Quantity का हुआ करता था, इसी प्रकार सभी Index का lot size पहले कुछ अलग था और अभी 2025 में बदलकर निम्नानुसार कर दिया गया है। जैसे कुछ Popular Index का Lot Size नीचे दिया गया है।

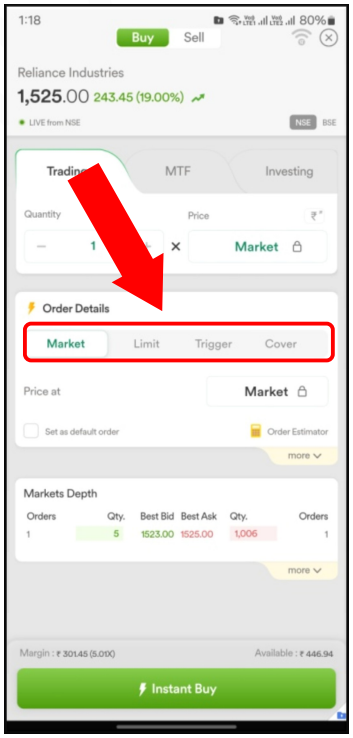
| S.N. | Index Name | Symbol | Lot Size (Quantity) |
|---|---|---|---|
| 1. | Nifty 50 | NIFTY | 75 |
| 2. | Bank Nifty | BANKNIFTY | 30 |
| 3. | Nifty Fin | FIN NIFTY | 65 |
| 4. | Midcap Nifty | MIDCPNIFTY | 120 |
| 5. | Nifty Next 50 | NIFTYNXT50 | 25 |
| 6. | Sensex | SENSEX | 20 |
| 7. | Sensex 50 | SENSEX50 | 60 |
| 8. | Bankex | BANKEX | 30 |

# Order कितने प्रकार के होते हैं?

दोस्तों Share Market में जब हम पहली बार कुछ खरीदते या बेचते हैं, तब हमारे सामने तरह- तरह के Order Type दिखते हैं, जिससे हम Confuse हो जाते हैं, कि आखिर किसका मतलब क्या होता है? तो ऐसे में हमें यह पता होना चाहिए कौन सा Order Type कैसे कम करता है।

तो चलिए आज के इस Article में हम सभी Order Type के बारे में सीखते हैं।

**1. Regular Order :-** दोस्तों Regular Order कि Validity सिर्फ 1 दिन की होती है। यानी कि आप जिस दिन Order Place करते हैं, उसी दिन Execute हो सकता है, अगर Order Execute नहीं हुआ तब वह Order Market बंद होने के बाद Expire हो जाएगा और Next Day आपको फिर से Order Place करना पड़ेगा।




Regular Order में Intraday और Delivery दोनो Type का Order ले सकते हैं और इन दोनो में हम Limit Order या Market Order लगाकर Limit Price या Market Price पर खरीद सकते हैं।

- **Limit Order:** इस Order कि मदद से हम अपने अनुसार जिस Price पर किसी Share को खरीदना चाहते हैं, उस Price पर Order लगाकर खरीद सकते हैं।

  **Example:** अगर किसी Share का Price 173रु. Currently चल रहा है और हम उसे 170रु में खरीदना चाहते हैं तो हम Limit Order लगाकर खरीद सकते हैं।

- **Market Order :-** इस Order की मदद से हम जिस Share को खरीदना चाहते हैं उसे Market में चल रहे Current Price पर ही Immediately खरीद सकते हैं।

  **Example:** अगर किसी Share का Price 173.25रु. Currently चल रहा है, तो हम जैसे ही Market Order Place करेंगे, तुरंत ही Current Price 173.25रु. में Buy हो जाएगा।

Note : ये सभी Order Option Trading करते समय INDEX में भी लगा सकते हैं।

**2. Stoploss Order :-**Stoploss Order कि Validity भी सिर्फ एक दिन की होती है। और इसमें भी Intraday और Delivery Order ले सकते हैं।

लेकिन इसमें Limit और Market कि जगह Stoploss Order Place किया जाता है। तो चलिए अब हम SL Order लगाना सीखते हैं।

दोस्तों Stoploss Order में बहुत ध्यान पूर्वक समझना होगा, क्योंकि इसको समझना थोडा मुश्किल होता है। तो चलिए मै इस मुश्किल को आसान करके समझाता हूँ।

| | |
|---|---|
| Share | - XYZ |
| Market Price | - 250रु. |
| Quantity | - 1 |
| SL Price | - 251रु. |

दोस्तों उपर दिए गए Example में XYZ Share का Current Price - 250रु. चल रहा है। जिसका हम 1 Quantity खरीद रहे हैं।

अब सबसे बड़ा Confusion तब होता है, जब हम SL Price में Market के Price से ज्यादा डालते हैं। पहली बार में हम सभी यही सोचते हैं, कि SL Price तो Market के Price से कम होना चाहिए।

अगर आप भी ऐसा सोचते हैं, तो सही सोच रहे हैं इसमें कुछ गलत नहीं है, बस आपको ये पता होना चाहिए, कि ऐसा सोचना कब सही है?

- दोस्तों जब हम Share Sell करते हैं तब हम Stoploss, Market Price से कम रखते हैं, इसके बारे में हम आगे Detail में जानेगे।
- दोस्तों अभी हम Share Buy करने के लिए SL Order लगा रहे हैं, इसलिए Market Price से ज्यादा डालते हैं।

Share Buy करते समय SL Order Market Price से ज्यादा इसलिए रखते हैं, कि कहीं अचानक से Market Price बहुत ज्यादा न बढ़ जाए, जब हम Buy पर Click करते हैं, तो ऐसे में महंगे Price पर Buy न हो जाए, नहीं तो ऐसे में हमारा Loss हो सकता है।

**Example:** मानलो XYZ Company का Share Price अभी 250रु. है और हम जैसे ही Buy पर Click करते है और उसका Market Price 260रु. हो जाता है, तो हमें नुकसान होगा। इस नुकसान से बचने के लिए हम 251रु. का Stoploss लगाते हैं जिससे उस Share का Price 251 से कम रहे तो Buy हो जाएगा और अगर Price 260रु. होगा तब हमारा Order Execute ही नहीं होगा, जिससे हमारा Loss होने से बच जायेगा।

"I Hope कि आपको SL Order बहुत अच्छे से समझ आ गया होगा।"

**3. GTT Order :-** दोस्तों GTT का Full Form 'Good Till Triggered' होता है और इसकी सबसे खास बात यह है कि एक बार आपने GTT Order Place कर दिया तो यह Order पूरे एक साल (365 दिन तक) Valid रहेगा। हालांकी इस Order को Manually कभी भी Cancel कर सकते हैं।

Note- अगर आप GTT का उपयोग Option Trading में करते हैं, तो इस Order कि Validity Option के Expiry Date तक ही रहेगा, 365 दिन तक नहीं।

GTT Order के Through भी आप Intraday या Delivery में Order ले सकते हैं। लेकिन GTT कि दूसरी सबसे खास बात यह है कि इसमें आप Share Buy करते समय ही Stoploss और Target दोनो एक साथ लगा सकते हो।

GTT Order का उपयोग ज्यादातर ऐसे Trader या Investor करते हैं। जो अक्सर Market में Active नहीं रहते, जिनको समय नहीं है या जो लोग Job में हैं, वे लोग अक्सर GTT Order लगाकर रखते हैं।

वैसे तो GTT Order का महत्व हम सभी के लिए बहुत ज्यादा है, यह Trading को बहुत आसान बना देता है, लेकिन यह Features सभी Brokers नदीं देते हैं।

**Iceberg Order :-** Iceberg Order, Share Market में बड़ी मात्रा में Share खरीदने या बेचने का एक तरीका है, इसमें बड़े Order को कई छोटे- छोटे Order में बांटा जाता है और इसे Hidden Order भी कहा जाता है।

Iceberg Order का इस्तेमाल, बड़े Order को छिपाने के लिए किया जाता है। इस तरह, बाज़ार को कुल Order का सिर्फ़ एक छोटा हिस्सा ही दिखाई देता है। Iceberg Order का इस्तेमाल, ज्यादातर बड़े व्यापारियों और Institutional Investor द्वारा किया जाता है।

**Cover Order :-** Cover Order एक ऐसा Order होता है जिसमें Market Order या Limit Order के साथ Stoploss Order भी होता है। यह Order, Risk कम करने के लिए बनाया गया है, Cover Order, Intraday Trading में इस्तेमाल किया जाता है।

**Bracket Order :-** Bracket Order एक ऐसा Order Type है, जिसमें एक साथ तीन Order Place किए जाते हैं। इसमें प्रारंभिक Order Entry करने के लिए होता है। जिसमें आप Market और Limit Order सेट कर सकते हो और दूसरा Order Stoploss तथा तीसरा Order Target के लिए उपयोग किया जाता है। Bracket Order में जब आपकी Entry Confirm हो जाती है, तब आपके System पर दो Order लग जाते हैं पहला Stoploss और दूसरा Target, अब इनमें से यदि आपका Stoploss Hit होता है, तो Target Automatic Cancel हो जाएगा और यदि आपका Target Hit हो जाता है, तो Stoploss Automatic Cancel हो जाएगा अर्थात इन दोनों में से कोई एक Hit होगा और दूसरा वाला Automatic Cancel हो जाएगा।

Bracket Order को केवल Intraday Trading में ही उपयोग किया जा सकता है। यह Order एक Trader को बहुत ही सुरक्षा प्रदान करता है, जिसमें Trader अपना Entry करने के साथ ही Stoploss और Target लगाकर Tension Free हो सकता है।

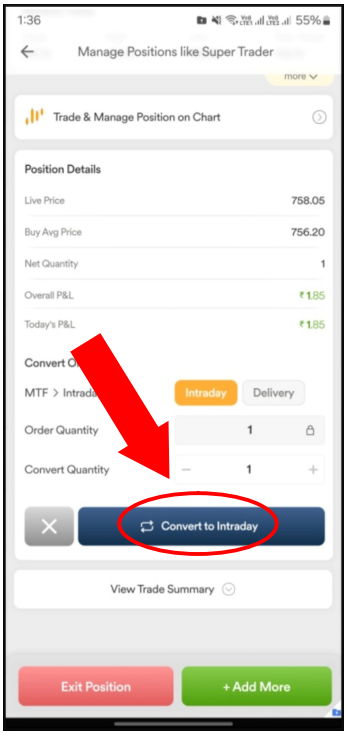
**नोट :** Bracket Order लगाने के बाद Stoploss या Target दोनों में से किसी को भी Cancel नहीं किया जा सकता लेकिन Modify Order किया जा सकता है। और Cancel करने पर Open Position Market Price पर Exit हो जाता है।

**OCO Order :-** OCO Order एक तरह का Conditional Order होता है, इसमें दो अलग-अलग Orders Place किए जाते हैं। अगर इनमें से कोई भी एक Order Execute हो जाता है, तो दूसरा Order अपने आप Cancel हो जाता है। इस प्रकार इस Order को “One Cancels Other” Order कहा जाता है। इस Order की मदद से एक Trader अपने Risk और Reward दोनों को एक साथ Manage कर सकता है। यह Trade को Automate करने में मदद करता है और इसमें निरंतर निगरानी करने की जरूरत नहीं पड़ती है।

# Convert Order क्या होता है ?

दोस्तों Share Market में Convert Order का मतलब है, कि यदि आपने कोई Share Delivery में खरीदा है और उसे आप Intraday में बदलना चाहते हैं या फिर आपने कोई Share Intraday में खरीदा है और उसे आप Delivery में बदलना चाहते हैं, तो इसे Convert Order कहा जाता है।

मान लो अगर आपने कोई Share Delivery में खरीदा है तो आपने उसके लिए पूरा पैसा दिया होगा। अब यदि आप Margin का फायदा उठाना चाहते हैं तो आप उसे Intraday में बदलकर Margin का फायदा उठा सकते हैं, जिससे आप Intraday में और भी Shares खरीद पाएंगे।




और यदि आपने कोई Stocks, Margin का उपयोग करके Intraday में खरीदा है और आपको यह Share लंबे समय तक के लिए अपने Demat Account में Hold करना है, तब आप पूरा Margin देकर इसे Delivery में बदल सकते हैं।

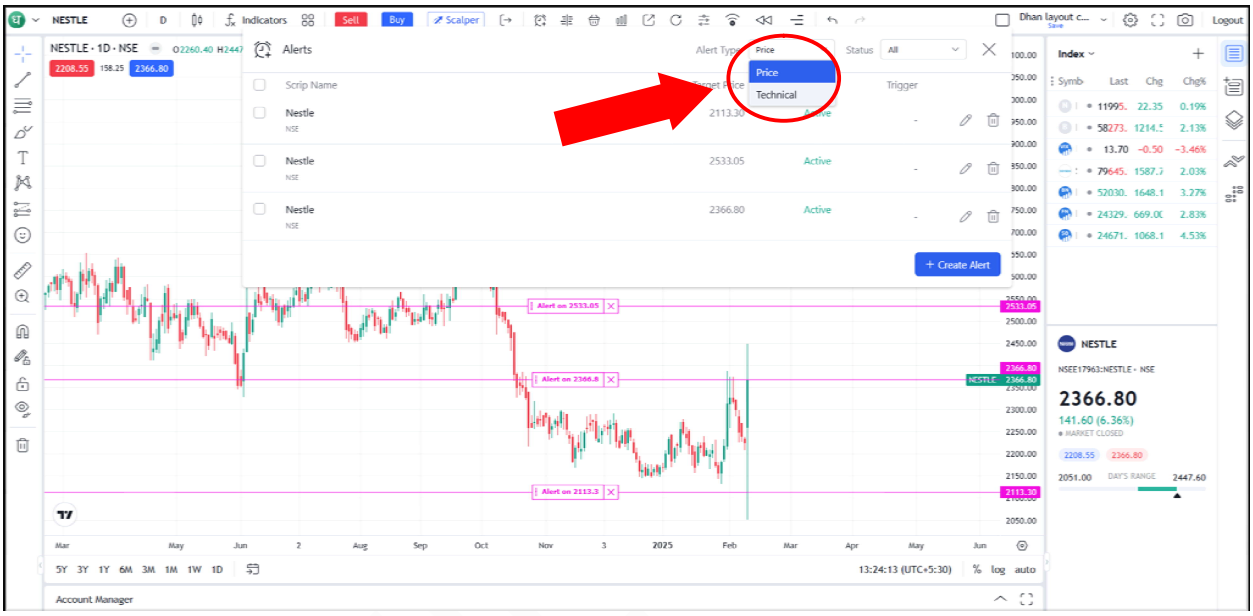
# Price Alert और Technical Alert क्या होता है?

**Price Alert :** इसकी मदद से आप Share Market में किसी भी Stock के एक निश्चित Price पर Alert सेट कर सकते हैं। जिससे उस Stock का Price उस निश्चित Price पर पहुंच जाता है, तब आपको एक Alert Message Show करेगा जिससे आप Share Market के उतार-चढ़ाव से Updated रह सकते हैं।

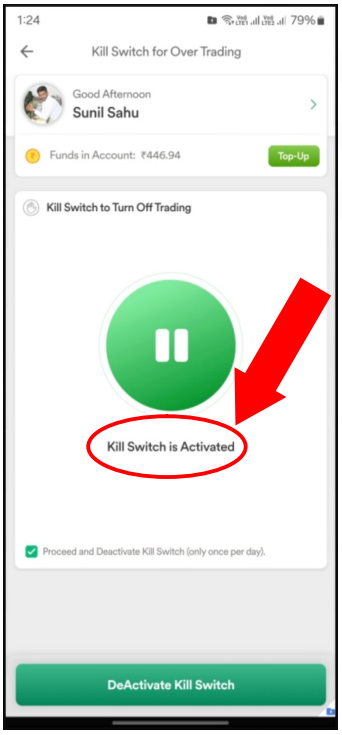
**Example :** यदि किसी Share का Price ₹100 है और हमने Price Alert ₹110 का सेट किया है, तो जब इस Share का Price ₹100 से बढ़कर ₹110 चला जाएगा तब हमको एक Alert Message दिखाई देगा या फिर इसके विपरीत यदि हमने Price Alert ₹90 पर सेट कर दिया, तो जब इस Share का Price ₹100 से गिरकर ₹90 आ जाएगा तब हमें एक Alert Message मिलेगा। जिससे हम Market को लगातार

ना देखते हुए भी अपने पसंदीदा Share का भाव Track कर सकते हैं, इसे ही Price Alert कहा जाता है।

**Technical Alert :** इसी प्रकार यदि हम किसी Stock के लिए कोई Conditional Alert सेट करते हैं, जैसे कि किसी Strategy के आधार पर या कोई Crossover के आधार पर यह Condition उस Stock में Apply हो जाता है तब हमें फिर से एक Alert Message मिलता है, इस Alert को Technical Alert भी कहा जाता है।




## Kill Switch Feature क्या होता है ?




Trading में Kill Switch का मतलब है Trading से Break लेना या किसी खास Segment को कुछ समय के लिए Disable कर देना। यह सुविधा Traders को Over Trading करने से बचाने के लिए दिया जाता है।

इसकी मदद से एक Trader अपने उस दिन के Trading को अस्थाई रूप से रोक सकता है और Over Trading करने से बच सकता है। यह Features उन सभी Traders के लिए बहुत ज्यादा उपयोगी है, जो लोग Over Trading कर बैठते हैं और अपने Daily Trade Limit और Emotion पर Control नहीं कर पाते हैं।

# Time Decay क्या होता है ?

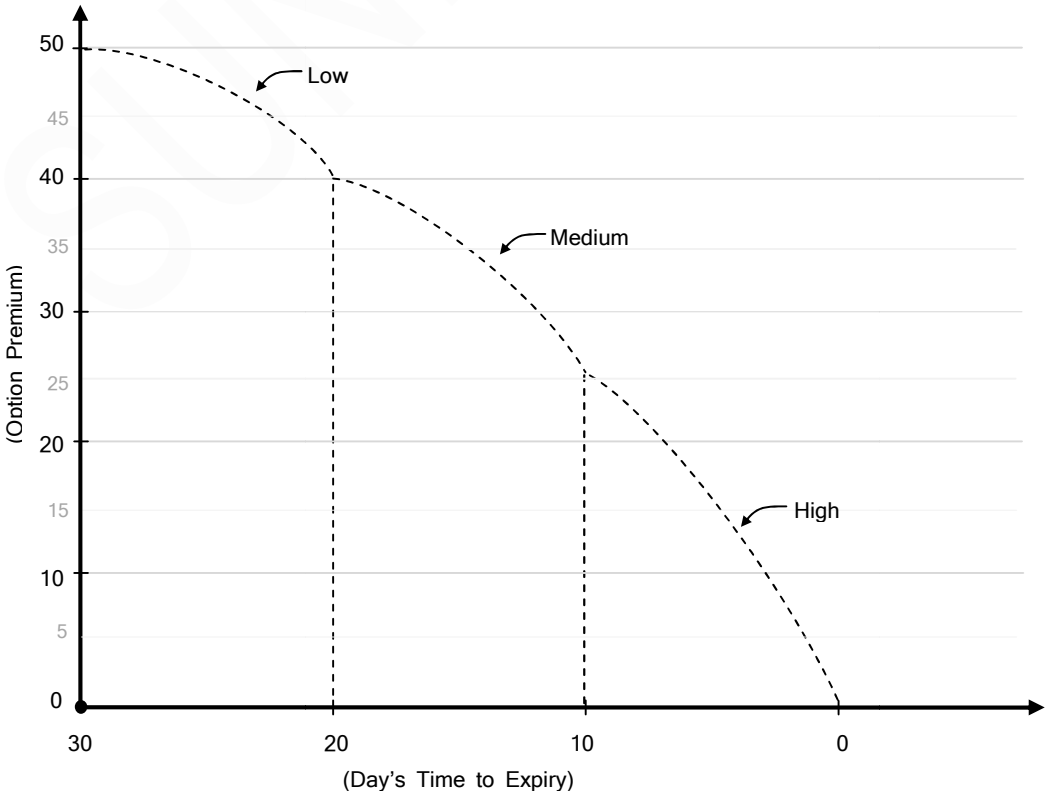
दोस्तों Option Trading में Time Decay को समझना बहुत जरूरी है, नहीं तो Loss होने की संभावना 99% हो जाता है, तो इसलिए आज इस Article में Time Decay को समझेंगे।

दोस्तों Time Decay को थीटा (Theta) के नाम से भी जाना जाता है। तो Option Trading के अंदर जैसे- जैसे Expiry Date पास आता है, सभी Option (Call & Put) कि कीमत (Premium) गिरती जाती है। इसलिए इसमें कहा जाता, कि समय ही पैसा है,"Time Is Money".

यदि Market कि सभी स्थितियाँ जैसे Market का घटना या बढ़ना, Volume, OI आदि सभी स्थिर हो जाए और समय बीतता जाए, तब Time Decay कि वजह से Premium का Price घटता जाएगा।

और इसलिए एक Option Buyers के लिए Time Decay नुकसान को बढाता जाता है और वहीं Option Seller को लगातार समय के सांथ Time Decay का Benefit मिलता रहता है। यही वजह है कि Option Buyers के लिए Time Decay Enemy और Option Sellers के लिए Friend भी कहा जाता है।

चलिए इसको एक ग्राफ से समझते हैं -



इस Graph से हमें पता चलता है, कि कैसे Time Decay कि वजह से समय के साथ Premium Price कम होता है?

इस Graph में आप देख सकते हैं कि Expiry से 30 दिन पहले Premium 50रु. था और अगले 10 दिन बाद, यानी 20 दिन पहले Price 40रु. हुआ और अगले 10 दिन बाद या Expiry से 10 दिन पहले, फिर से इसका Price 25रु. हो गया और अगले 10 दिन बाद यानी Expiry के दिन Premium '0रु.' हो गया, कैसे?

इसका मतलब Expiry के जितना पास आते हैं Time Decay का प्रभाव उतना ही ज्यादा होता जाता है।

## Stoploss, Target & Trailing S.L. क्या होता है ?

**Stoploss Order:** – दोस्तों Share Market में Investment या Trading करना बहुत Risky होता है और ऐसे में अपने Loss को कम या Fix करने के लिए हम Stoploss का उपयोग करते हैं।

जैसा कि इसके नाम से ही पता चल रहा है कि “Stop+Loss” यानी कि, Loss को रोकना। Stoploss Price पर हमारा Maximum Loss होता है, जिस Price पर हम अपने Share Exit करते हैं। Stoploss Price पर Exit कर देने कि वजह से हम बड़े नुकसान से बच जाते हैं।

Stoploss का उपयोग अधिकतर Scalping, Intraday या Swing Trading में किया जाता है, जिससे बाजार के बड़े उतार-चढ़ाव में कोई बड़ा नुकसान होने से बचा जा सके, जबकि Investment अगर Long Time के लिए किया जाए तो Stoploss का कुछ खास महत्व नहीं होता है।

**Example:** मानलो, अगर हम Intraday में Trading करते समय किसी ABC Company का Share 470रु. में खरीद लेते हैं, तब हमें Market के उतार- चढाव से बहुत बड़ा नुकसान ना हो, इसके लिए हम Stoploss लगायेंगे।

अब मानलो कि इसमें हमने 460रु. का Stoploss लगा लिया और Market में किसी ख़राब News या किसी भी वजह से उसका Price गिरकर 455/- हो जाता है, तब हमारा Stoploss 460रु. पर ही Hit हो जाएगा और हमें सिर्फ़ 10रु. का Loss होगा और हमारा Share 460रु. में Sell हो जाएगा।

अगर हम Stoploss नहीं लगाते तो हमें 15रु. per Share के हिसाब से Loss हो जाता, तो इसी Loss से बचने के लिए हम Stoploss लगाते हैं।

**Target :-** जिस प्रकार Loss को कम करने के लिए Stoploss लगाते हैं, उसी प्रकार Profit को भी Fix करने के लिए Target लगाया जाता है।

**Example :-** मानलो कि हम ABC Company का Share 100रु. में Buy करते हैं, अब अगर हम Target मानलो 110रु. का लगाते हैं, और Market उतार-चढ़ाव कि वजह से 112रु. तक गया और बाद में Share फिर से गिरकर 100रु. हो जाता है, तो हमारा Profit 110रु. पर ही Book हो जायेगा, क्योंकि हमने पहले ही Target Price डाला हुआ है, और हमें 10रु. का Profit हो चुका रहेगा।

अक्सर Intraday या Scalping में ऐसा होता है कि Market ऊपर जाकर वापस गिर जाता है। तो ऐसे में Profit को Fix करने के लिए Target का Use करते हैं।

**Trailing Stoploss :-** अभी आपने Target के बारे में पढ़ा जिसमें हमारा Profit Fix हो जाता है, लेकिन इसमें Profit Unlimited हो सकता है और वो भी Loss को Fix करते हुए।



यानी कि Loss Fix और Profit Unlimited, तो चलिए समझते हैं, कि इसका उपयोग कैसे करना है?

**Example:-** माना कि हम किसी ABC Company का Share 100रु. में Buy किए हैं और Stoploss 90रु. का लगाए हैं और उस Share का Price बढ़कर 110रु. हो जाता है, तब पहला वाला Stoploss Trail हो करके यानी कि बढ़ कर Automantic 100रु. हो जायेगा।

अब यदि Market फिर से गिरकर 100रु. या उससे नीचे जाएगा, तो हमें कोई Loss नहीं होगा लेकिन अगर Market बिना गिरे लगातार बढ़ता जाता है, तब Stoploss बार - बार Trail हो के आगे बढ़ता रहेगा। ऐसे में हमारा Loss नहीं होगा केवल Profit ही होगा और Market जितना बढ़ेगा उतना Profit होता रहेगा और जब भी Price नीचे Stoploss तक आएगा, तब हमारा Stoploss Hit होगा, लेकिन फिर भी हम Profit में ही रहेंगे। तो इस तरह से हम Trailing S.L. का Use कर सकते हैं।

# Option Buyers (Max. Profit & Loss कितना हो सकता है?)

F&O में Trading करने से पहले हर Beginners के मन में यह सवाल जरूर उठता है, कि हमें Option Trading में अधिक से अधिक कितना Loss और Profit हो सकता है? तो चलिए इस Article में इन सारे सवालों का जवाब आसान Language में जानते हैं-

**Option Buyers Maximum Profit** : दोस्तों अगर आप Option Trading में Buyers हैं, चाहे आप Call खरीदें या Put दोनों में Profit की कोई Fix Limit नहीं होता है। यानी कि Profit Unlimited हो सकता है।

यह Totally Depend करता है Market के ऊपर, कि कितना जल्दी आपका Strike Price Hit होता है और Market कैसा Perform करता है?

**Option Buyers Maximum Loss** :- Option Buyers का Maximum Loss केवल उतना ही हो सकता है जितना उसने Premium दिया है, उससे अधिक नहीं। क्योंकि Premium अधिक से अधिक Zero हो सकता है Negative नहीं, और पूरा Premium तब डूबेगा, जब Expiry तक 'OTM' या “ATM” में ही उसका Strike Price रह जाएगा। और Stoploss लगाकर Loss को और भी कम किया जा सकता है।

**Imp Note:** Beginners Unlimited Profit सुनकर बहुत ज्यादा Return कि उम्मीद करने लगते हैं, जबकि ऐसा नहीं करना चाहिए।

**Example :** 100रु. का Premium Definitely 120रु., 150रु., 200रु. तक बढ़ सकता है, लेकिन “2000, 2500 इतना तो नहीं बढ़ेगा न”, मैं ऐसा बिल्कुल नहीं कह रहा हूँ कि 2000रु. होना संभव नहीं है, लेकिन Generally ऐसा नहीं होता है, इसलिए एक Limit तक ही Profit का उम्मीद करें, तो ज्यादा बेहतर होगा। (Be Practical)

Note - "Option Buyers भी अपना Profit & Loss कभी भी लेकर Contract से बाहर निकल सकता है।"

## Option Sellers (Max. Profit & Loss कितना हो सकता है?)

**Option Sellers Maximum Profit** : Option Sellers को Maximum Profit केवल उतना ही हो सकता है, जितना उस Contract का Premium है। उससे ज्यादा Profit नहीं हो सकता, यानी की Option Sellers का Profit Limited होता है।

**Option Sellers Maximum Loss :** दोस्तों Option Selling के लिए बहुत ज्यादा पैसे का Requirement (लाखों में) होता है। हालांकि इसमें Loss Unlimited हो सकता है, लेकिन Option Selling में Profit के Chanses ज्यादा होते हैं। इसमें Loss कि कोई Fix Limit नहीं होती है।

Note - "Option Sellers भी अपना Profit & Loss कभी भी लेकर Contract से बाहर निकल सकता है।"

Option Buy & Sell में हमने सिर्फ "Maximum" (Profit & Loss) कि बात की है, "Minimum" कि नहीं, क्योंकि Minimum P&L कोई Fix नहीं होता है।

## Option Trading में Charges कितना लगता है?

दोस्तों Option Trading में Charges को लेकर बहुत ज्यादा Confusion होता है और लगभग सभी Beginners को यह परेशानी झेलनी पड़ती है। तो चलिए इस Article में ध्यान से समझते हैं, कि Option Trading करने पर किस- किस तरह का और कितना Charge लगता है।

दोस्तों Basically Option Trading में हमें दो तरह का Charge देना पड़ता है-

**1. Brokerage Charge :** यह Charge कितना होगा? यह पूरी तरह से Broker जैसे कि Groww, Upstox, Zerodha, Dhan आदि के ऊपर निर्भर करता है। सभी Broker का Charge अलग- अलग हो सकता है। यह Charge Broker स्वयं निर्धारीत करता है और Broker इसमें बदलाव भी कर सकता है।

**Example :**

- Groww Brokerage 20रु. Per Executed Order. (Buy / Sell)
- Zerodha Brokerage 20रु. या 0.03% इनमें से जो कम रहेगा उतना हर एक Executed Order पर देना पड़ता है।

**2. Regulatory & Statutory Charges :-** दोस्तों यह Charges सभी Broker में एक समान रहता है। चाहे आप किसी भी Broker App से Option Trading करते हो इस Charge में कोई भी अंतर देखने को नहीं मिलेगा।

यह Charge Intraday और Delivery दोनों में अलग- अलग लगाए जाते हैं, जिसका Detail नीचे है-

| S.N. | Charges | Intraday | Delivery |
|---|---|---|---|
| 1. | STT Charges | 0.01% (Sell) | 0.05% (Sell) |
| 2. | Stamp Duty | 0.002% (Buy) | 0.003% (Buy) |
| 3. | Exchange Transaction Charge | NSE : 0.002% (Buy,Sell) | NSE : 0.053% (Buy,Sell) |
| 4. | SEBI Turnover Charge | 0.0001% (Buy,Sell) | 0.0001% (Buy,Sell) |
| 5. | DP Charge | ₹0.0 (Buy,Sell) | ₹0.0 (Buy,Sell) |

## Validity (Day & IOC) Order क्या होता है?

दोस्तों Validity का यह Advance Features कुछ Broker को छोड़कर, लगभग सभी में यह Available है, जैसे : Groww, Upstox, Zerodha, Angel One... आदि में Available है। तो चलिए इस Article में सिखते हैं कि इसका उपयोग क्या है?

दोस्तों जब आप Regular Order में कोई Order Place करते हैं, तब आपको Validity का Option मिलता है, जिसमें Day और IOC दो तरह का Option मिलता है।

**Day:** जब आप Day Option को Select करके कोई Order Place करते हैं, तब वह Order पूरे दिन भर यानी कि Market Close (3:30pm) होने तक, उस Order के Execute होने का इंतजार करता रहता है।

अगर Order Execute हो गया तो ठीक और यदि नहीं हुआ तो अगले दिन वह Order Automatic Cancel हो जाएगा।

**IOC:** जब हम IOC Option को Select करके कोई Order Place करते हैं, तो वह तुरंत ही उस Order को Execute करेगा (Buy/Sell), अगर नहीं हुआ तो वह Order Cancel कर दिए जाते हैं।

- IOC : Immediate or Cancel

# Implied Volatility (IV) क्या होता है?

दोस्तों Option Contract में IV से यह पता चलता है कि Traders उस Option या Contract के Risk के बारे में क्या सोचते हैं? यही IV किसी Option के Premium को तय करने में काम आता है।

Basically IV ज्यादा होने पर Option Contract का Premium ज्यादा होता है और IV कम होने पर Premium भी कम होता है।

Option Sellers Market कि Volatility के अनुसार Premium का Demand करते हैं। Market जितना ज्यादा Volatile रहेगा, Option Sellers को उतना ही ज्यादा Risk होगा इसलिए Option Sellers Premium को बढ़ाते हैं।

Market को Analysis करने वाले पूरे Market के Movement को समझने के लिए IV को ध्यान में रखते हैं। ये लोग Normally ATM Option कि IV पर नजर रखते हैं और Generally 20 - 25% तक कि IV को सामान्य Volatile माना जाता है।

Note:- "दोस्तों सामान्यतः IV से यह पता लगा पाना मुश्किल है, कि Market की दिशा क्या होगी?"

# PCR Value क्या होता है?

दोस्तों PCR का Full Form होता है- Put Call Ratio. जैसा कि नाम से ही पता चल रहा है "Put और Call का अनुपात" यही PCR Value कहलाता है। लेकिन इसको-

- कैसे Calculate किया जाता है?
- क्या Formula होता है?
- कौन से Data का अनुपात निकालना है?
- निकले हुए उस अनुपात Value का क्या मतलब होता है?

सारी चीजें आगे हम इस Article में Detail में समझेगे-

दोस्तों Generally Open Interest (OI) और Volume का PCR निकाला जाता है, लेकिन OI का PCR, Volume के PCR से ज्यादा अच्छा माना जाता है, क्योंकि Volume

में बंद हुए Contract भी Count होते हैं, जबकि OI में केवल खुले हुए Contract रहते हैं। इसलिए हम OI का PCR निकालेंगे।

और PCR Calculate करने के लिए $\text{PCR} = \frac{\text{Put OI}}{\text{Call OI}}$ ← इस Formula का Use किया जाता है। तो चलिए अब हम एक उदाहरण के माध्यम से PCR निकालते हैं और समझते हैं कि कितना PCR होने पर Market का Direction किस तरफ हो सकता है।

- **Basic नियम –**

यदि PCR का Value निम्न हों, जैसे -

| | | |
|---|---|---|
| 1. | 1.7 या अधिक तब | Reverse Down ↓ |
| 2. | 1 - 1.7 तक | Up Side ↑ |
| 3. | 1 | Nutral Market ↕ |
| 4. | 0.7 - 1 तक | Down Side ↓ |
| 5. | 0.7 या कम | Reverse Up Side ↑ |

"Arrow (↑↓) का निशान Market कि दिशा बता रही है।"

## Example :

(i) मानलो Put का Total OI = 100 है और Call का टोटल OI = 50 है, तब -

$$\text{PCR} = \frac{\text{Put OI}}{\text{Call OI}} = \frac{100}{50} = 2 \downarrow$$

(Market में Down Side Reversal आ सकता है।)

(ii) मानलो Put का Total OI = 100 है और Call का Total OI = 80 है, तब -

$$\text{PCR} = \frac{100}{80} = 1.25 \uparrow$$

(Market Up Side जा सकता है।)

(iii) मानलो Put का Total OI = 80 है और Call का Total OI = 100 है, तब -

$$\text{PCR} = \frac{80}{100} = 0.8 \downarrow$$

(Market Down Side जा सकता है।)

(iv) मानलो Put का Total OI = 50 है और Call का Total OI = 100 है, तब -

$$\text{PCR} = \frac{50}{100} = 0.5 \uparrow$$

(Market में Up Side Reversal आ सकता है।)

Note :- कभी भी PCR निकालना हो, तो Spot Price के कुछ ही ऊपर और नीचे का Value लेना चाहिए, तब ज्यादा बेहतर Result मिल पाता है।

जैसे Nifty 50 का PCR निकालना हो तो, Nifty के Current Price (Spot Price) से लगभग 500 से 800 Point तक का PCR निकालना चाहिए, जिससे हमें ज्यादा बेहतर Result मिलता है।

Note: Intraday trading के लिए हर ½ hr में PCR Calculate करना चाहिए।

## Time Frame क्या होता है?

Time Frame का मतलब है, वह निश्चित समय जिसमें किसी काम को पूरा किया जाना है, जैसे Second, Minute, Hour, Day, Week, Month इत्यादी Time Frame कहलाता है। "Trading' में भी Time Frame का उपयोग किया जाता है। Time Frame Select करने के बारे में कुछ महत्वपूर्ण बातें :-

- Time Frame Set करने का कोई निश्चित नियम नहीं है।
- हर Trader अपने Trading Style और परिस्थिती के आधार पर Time Frame Select करता है।
- Chart पर Technical Analysis करने के लिए सही Time Frame का चुनाव करना बहुत जरूरी है।
- आमतौर पर Traders Scalping करने के लिए कुछ Second से लेकर 1, 2 या 3 मिनट तक का Time Frame चुनते हैं, वहीं Intraday Trading के लिए 5,10,15 मिनट का और Swing Trading या Positional Trading के लिए 1hr, 1D, 1W, 1M तक का भी Time Frame उपयोग करते हैं।

मतलब जितना कम समय लिए Trading होगा, उतना कम Time Frame होगा और जितनी ज्यादा समय के लिए Trading या Position होगा, उतना बड़ा Time Frame Select किया जाता है।




# Intrinsic Value और Time Value क्या होता है?

Option Chain में Call और Put के जितने भी Contract हैं, सभी Strike Price में अलग- अलग Premium होते हैं। इस Premium में Intrinsic Value और Time Value दोनों होते हैं। अर्थात्

$$(\text{ITM})\ \text{Premium} = (\text{IV} + \text{TV})$$

Option के Premium का मूल्य उसके Demand और Supply पर निर्भर करता है।

अब हमें यह तो पता चल गया कि Premium में IV और TV होता है। यदि हमें यह पता चल जाए कि किसी Premium में कितना IV और कितना TV है, तो हम Premium को और भी गहराई से समझ पाएंगे।

**Intrinsic Value (IV) :-** Premium का Calculation करने के लिए Intrinsic Value का पता होना बहुत जरुरी हैं और यदि IV पता हो जाएगा तो Time Value आसानी से निकाला जा सकता है।

तो आइए जानते है Intrinsic Value कैसे निकाला जाता है?

किसी भी Premium में Intrinsic Value उस Asset के Current Market Price (Spot Price) और Premium के Strike Price के अंतर के बराबर रहता है। यह Calculation Traders को Expiry Day के दिन Option कि Real Value (IV) का अनुमान लगाने में मदद करता है, आइए इसे एक उदाहरण से समझते हैं-

मानलो,

Nifty Spot Price = 24822

Premium Strike Price = 22400 (CE)

तब, Intrinsic Value = 24822 - 22400

[ I.V. = 422 ]

**Formula :-**

(CE) Intrinsic Value (IV) = (Spot Price - Strike Price)

(PE) Intrinsic Value (IV) = (Strike Price - Spot Price)

**Time Value :-** जब हमे IV पता चल जाए, तो Premium में IV को घटाकर हम TV निकाल सकते हैं।

**Example:** मानलो 22400 के Strike Price पर Premium 742रू. है और Spot Price 24822 है, तो इसमें IV निकलेगा = 422रु.। अब हम 742रु. में 422रु. घटाएंगे, तो TV निकल जाएगा-

जैसे, Time Value = Premium - Intrinsic Value

= 742 - 422

Time Value = 320रु.

Note:- Option Chain में Call और Put के सभी Premium में Intrinsic Value नहीं होता है, केवल ITM Contracts में होता है। अर्थात्

(ITM) Premium = (Intrinsic Value + Time Value)

(ATM) Premium = [ IV (0%) + Time Value (100%) ]

(OTM) Premium = [ IV (0%) + Time Value (100%) ]

मतलब ATM और OTM के Premium में सिर्फ Time Value होता है, Intrinsic Value नहीं और T.V. समय के साथ कम होता रहता है और Expiry तक '0' हो जाता है।

इसलिए OTM या ATM का Premium Expiry के बाद '0' हो जाता है और ITM के Premium में Expiry के बाद सिर्फ Intrinsic Value बचा रहता है।

# Bid Price, Ask Price और Spread क्या होता है?

Bid और Ask Price का मतलब Market में किसी Asset को खरीदने और बेंचने के लिए तैयार सर्वोत्तम संभावित कीमत होता है।

**Bid Price :-**Bid (बोली लगाना / निलामी), Buyers (खरीदने वाला)

Bid Price, Market कि Demand Side को दर्शाता है। अधिक से अधिक कितना रुपये एक Buyer देना चाहता है किसी Asset / Share के लिए।

**Ask Price :-**Ask (पूछना), Seller (बेचने वाला)

Ask Price Market के Supply Side को दर्शाता है। किसी Share का वह Lowest Price जिसमें कोई Seller उसको बेचने के लिए तैयार है।

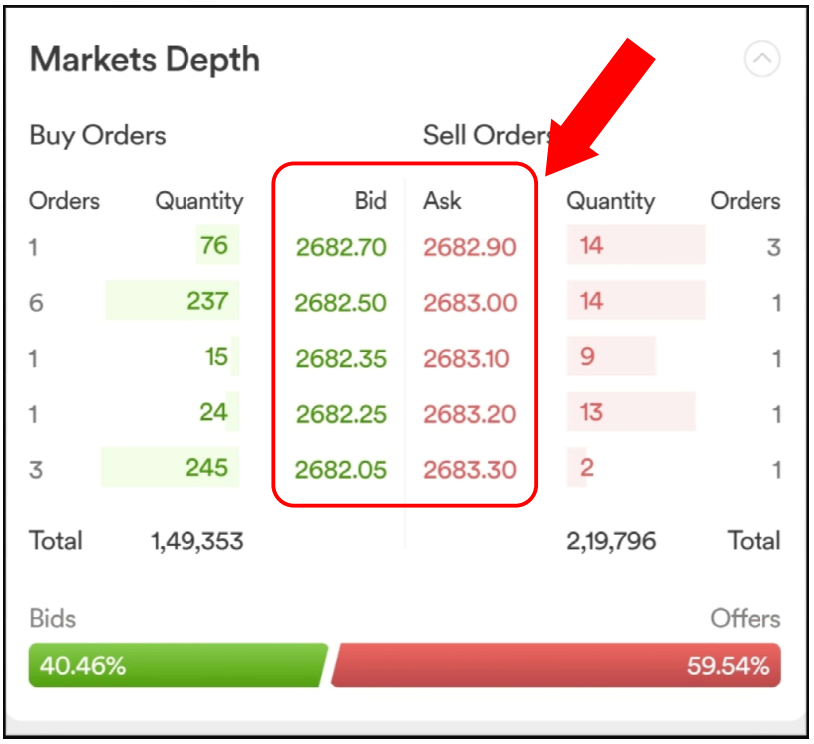
Note: Ask Price हमेशा Bid Price से बड़ा होता है। अर्थात्

Ask Price > Bid Price

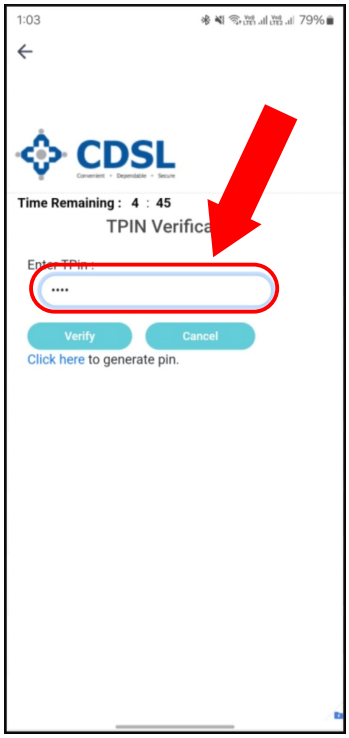
Bid price < Ask Price

**Spread:-** Ask Price और Bid Price के अंतर को Spread कहा जाता है। Spread जितना कम होता है, Liquidity उतना ही ज्यादा होती है। मतलब उस Asset या Stock को Easily Buy या Sell किया जा सकता है।

$$[\text{Spread} = \text{Ask Price} - \text{Bid Price}]$$



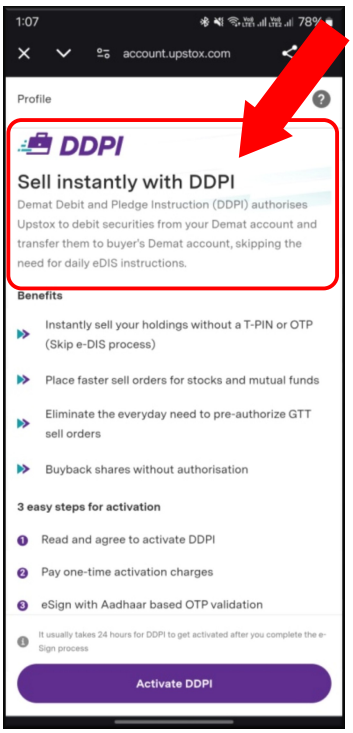
# T-Pin और DDPI क्या होता है ?



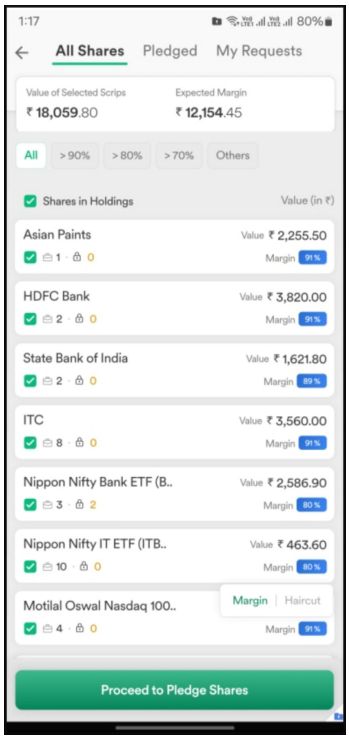

**T-Pin :** दोस्तों T-Pin चार अंको का संख्यात्मक Password होता है, इसका पूरा नाम "Transaction Personal Identification Number" होता है। इसका इस्तेमाल Investor का अपने Demat Account में Shares को Sell करने के लिए Verification के रूप में किया जाता है। यह आपके Stock के Security के लिए होता है। जब भी आप अपने Portfolio के Stock को Sell करने जाएंगे तो आपको सबसे पहले T-Pin से Verify करना पड़ेगा, यह Verification एक दिन में सिर्फ एक ही बार करना होता है।

**DDPI :** दोस्तों DDPI का Full Form "Demat Debit And Pledge Instruction" होता है। यह SEBI की तरफ से जारी किया गया एक Document है, यह Document Stock Broker को Investor के Demat Account से Share ले करके और उन्हें Exchange में भेजने की अनुमति देता है।

DDPI की मदद से आप अपने Demat Account में रखे गए Share को Sell या Pledge कर सकते हैं। DDPI आपको सिर्फ एक बार Enable करना पड़ता है, बार-बार नहीं। यदि आप DDPI Enable नहीं करते हैं, तो आप जब भी Share Sell करेंगे तो आपको अपने Share Sell करने से पहले T-Pin से Verify करना पड़ेगा। यदि आप DDPI Enable करके रखते हैं तो आपको बार-बार T-Pin से Verify करने की कोई आवश्यकता नहीं पड़ेगी। DDPI Enable करने के लिए Brokers आपसे कुछ Charges लेते हैं, जो Broker के अनुसार अलग-अलग होता है, लेकिन आमतौर पर यह Charges लगभग ₹100 + GST होता है। इस Charge में e-Stamp Paper, Handling, Transportation Scanning और Digitalization का लागत शामिल होता है।



# Pledge (गिरवी) क्या होता है?




Share Market में हम Stock Trading से Extra Income करने के लिए अपने Holding Shares को अपने Broker के पास गिरवी रखते हैं।

इसमें कुछ नियम होते हैं, जिसका पालन करना जरुरी होता है- जैसे Share Pledge करने के लिए आपके Share, Demat Holding में होना चाहिए।

Pledging के दौरान Broker कुछ 'Haircut' रख लेता है। Pledge करने के बाद जो नगद Margin या Collateral Margin मिलता हैं उसका उपयोग Equity, Intraday, F&O में Intraday Trading करने के लिए किया जाना चाहिए।

**Haircut :-** जब कोई Broker गिरवी रखे गए Share के बदले उधार देता है, तब Haircut रख कर नगद Margin देता है, जिससे Broker अपनी सुरक्षा के लिए एक Margin बनाए रख सके। मतलब उधार मिला पैसा, हमेशा गिरवी रखे Share के Market Price से कम होगा। गिरवी रखे गए Share के Market Price और उधार में मिले पैसे के बीच का अंतर "Haircut" कहलाता है।

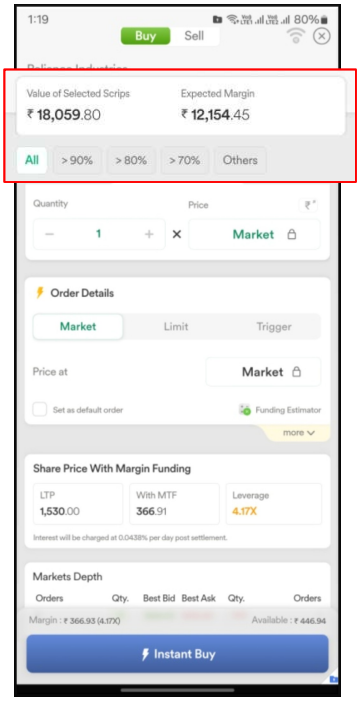
Haircut = Stocks का Market Price - Collateral Margin.

Broker Market कि Volatility को Absorbed करने के लिए ऐसा करते हैं, ताकि यदि Share Market में गिरावट हो, तो वे Margin कॉल कि मांग कर सकें।

इसका मतलब है कि Broker या तो Market में Share बेचेंगे या Investor को और Share Pledge कर Loss हुए पैसे की भरपाई करने को कहेंगे। इस प्रकार Haircut आपके Broker कि Safety के लिए होता है, जो Pledge किये गए Share में गिरावट के Against Broker को सुरक्षा प्रदान करता है।

# Leverage और Margin क्या होता है?

Leverage और Margin में Leverage का मतलब है किसी चीज को बढ़ाना और Margin का मतलब है कि आप किसी चीज़ के लिए पूरी कीमत न देकर, उसका एक छोटा सा हिस्सा देना और बाकी रकम उधार ले लेना।




Share Market में Leverage का मतलब है कि आपके पास जितना पैसा है, उससे कई गुना ज्यादा पैसों का Share खरीद सकते हैं। ऐसा करने के लिए आपको Margin का उपयोग करना पड़ता है। Margin के मदद से आप अपने Broker से पैसे उधार लेते हैं और फिर उन पैसों का इस्तेमाल Share खरीदने के लिए करते है।

Leverage का फायदा यह है कि अगर Shares कि कीमत बढ़ती है, तो आपको ज्यादा मुनाफा होता है। लेकिन इसका नुकसान यह है कि अगर Share कि कीमत गिरती है तो आपको ज्यादा नुकसान भी हो सकता है। इसलिए leverage का उपयोग करते समय सावधानी बरतनी चाहिए।

# Hedging (बचाव) क्या होता है?

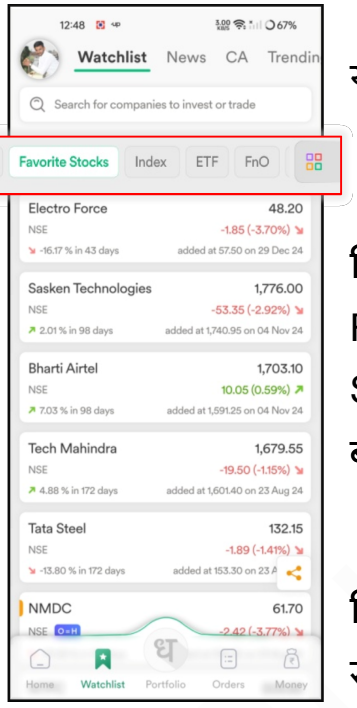
**Hedging :** Share Market में जोखिम प्रबंधन (Risk Management) कि एक रणनीति है। इसका मकसद Share Market में उतार - चढाव कि वजह से होने वाले नुकसान (Loss) को कम करना होता है। किसी Asset या Securities में Offsetting Position ली जाती है। Hedging करने के लिए Future और Option जैसे Derivative Segment का उपयोग बहुत अधिक किया जाता है।

**Example :** मान लिजिए आप काफी Research करके कुछ Stock खरीदते हैं। पैसे Invest करने के कुछ साल बाद आपको लगता है, कि Market में कुछ खराब News या Result के वजह से कुछ Time के लिए गिरावट होने वाली है, जिसकी वजह से आपको नुकसान हो सकता है। तो Market में अपने Investing को बचाने और बड़े नुकसान से बचने के लिए आप Future या Option में अपनी Stock के विपरीत

Position बनाकर अपने Loss को Hedge कर सकते हैं। जिससे Stock में हुए नुकसान कि भरपाई Future या Option में हुए Profit से हो जाती है।

**जैसे:** ABC नाम का Share आपने खरीदा हुआ है और कभी आपको लगता हैं कि अब Market में ABC Share का Price गिरने वाला है, तब आप Option में Put Contract Buy करके ABC Share को Hedge कर सकते हैं और बड़े नुकसान होने से बच सकते हैं।

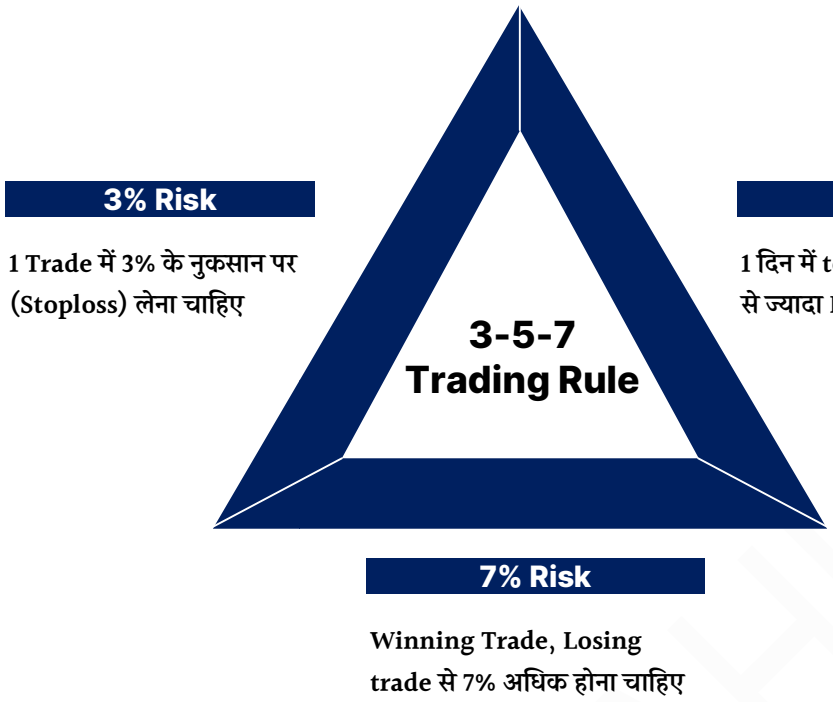
## Watchlist क्या होता है ?




Share Market में Watchlist ऐसे Contract या Stock का List होता है, जिन पर Investors नजर बनाकर रखना चाहते हैं। Watchlist में Investors अपने Favorite Stocks और Index को अपने हिसाब से Filter करके रखते हैं, जैसे- Banking Sector, Financial Stocks, Penny Stocks, Fundamental Strong Stocks, Dividend Paying Stocks आदि का अलग- अलग List बना कर रख सकते हैं।

Watchlist का मुख्य उपयोग यह होता है कि हम अपने हिसाब से अलग-अलग Category के Stocks को, जिसे हम आसानी से Track करना चाहते है या फिर हम जिस Stocks या Index को ज्यादातर उपयोग करते हैं उसे अलग-अलग List में Filter करके रख सकते हैं। जिससे हमें उन्हें Track करने में आसानी होती है।

# Trading में 3,5,7 का नियम क्या है?




3-5-7 नियम, Trading में एक तरह का Risk Management Strategy होता है। यह नियम बताता है कि 1 Trade में 3% से अधिक Risk न हो, सभी Open Trade पर Risk को अपने Total Capital का 5% तक सीमित रखें, और आपके Winning Trade आपके Losing Trade की तुलना में कम से कम 7% अधिक का होना चाहिए।

# Risk & Money Management कैसे करें?

Option Trading में Money Management का मतलब है, अपने पैसे को इस तरह से Manage करना कि आपको ज़्यादा से ज़्यादा फ़ायदा हो। Risk Management Trading में होने वाले संभावित Loss को कम करने और Return को बढ़ाने की प्रक्रिया है। Option Trading में काफ़ी ज़्यादा Risk होता है। Option Trading में नुकसान होने की Possibility ज़्यादा होती है, इसलिए Option Trading में Risk कम करने के लिए, Risk Management का Use करना ज़रूरी है। (1/4 Capital Use करना चाहिए, Full Quantity में Trade कभी नही करना चाहिए।)

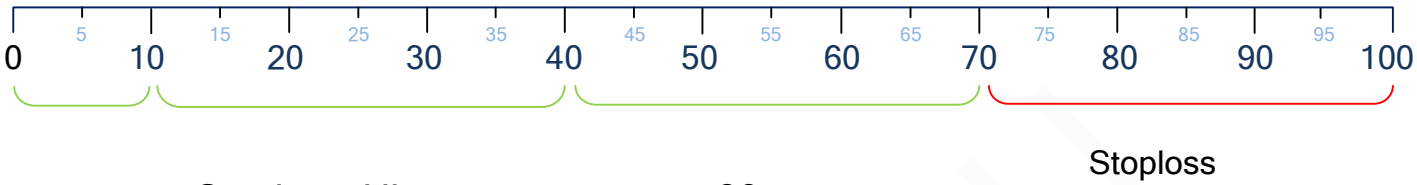
## Trading में Risk Reward Ratio की गणना कैसे करें?

इसकी गणना संभावित Loss को संभावित Profit से भाग देकर की जाती है, इसे Risk Reward Ratio (RRR) कहते हैं, जिसे अनुपात के रूप में व्यक्त किया जाता है, जैसे- 1:1, 1:2...

**Example :** यदि आप संभावित रूप से 200रु. कमाने के लिए 100रु. का Risk लेते हैं, तो अनुपात 1:2 है, जिसका अर्थ है कि आप जितना Risk लेते हैं, उससे दोगुना Profit कमाते हैं।

**Risk Reward Ratio Calculation :**

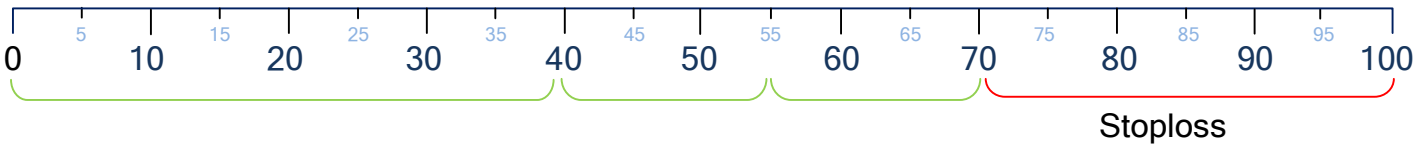
**1. RRR Calculation 1:1 (70% Accuracy)**




| | |
|---|---|
| Stoploss Hit | = 30 |
| Profitable Trade | = 70 |
| Recovery Trade | = 30 |
| Tax, Charges, Expense | = 30 |
| Profit | = 10 |

**Example :** यदि आपके Trade Setup की Accuracy 70% है और आपने Market में 100 Trade लिया जिसमें से 70 बार अपने Profit किया और 30 बार अपने Loss किया और यदि आपका Risk Reward Ratio 1:1 है। तब 70 Profitable Trade में से 30 Trade आपके Stoploss को Cover करने के लिए तथा 30 Trade आपके Total Trade पर लगने वाले Tax, Charge और Other Expense को Cover करने के लिए लग जाएगा, अब अंत में आपके पास कुल Profitable Trade 10 बचेंगे।

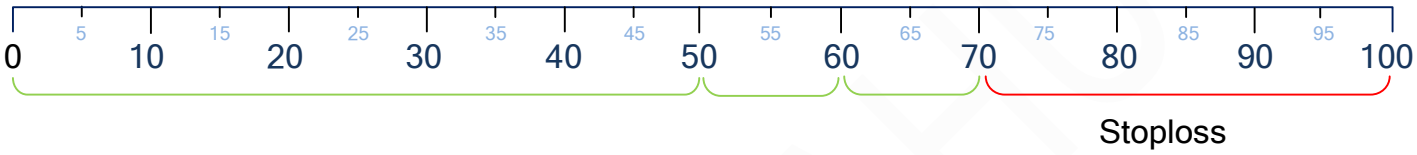
**2. RRR Calculation 1:2 (70% Accuracy)**




| | |
|---|---|
| Stoploss Hit | = 30 |
| Profitable Trade | = 70 |
| Recovery Trade | = 15 |
| Tax, Charges, Expense | = 15 |
| Profit | = 40 |

**Example :** यदि आपके Trade Setup की Accuracy 70% है और आपने Market में 100 Trade लिया जिसमें से 70 बार अपने Profit किया और 30 बार अपने Loss किया और यदि आपका Risk Reward Ratio 1:2 है। तब 70 Profitable Trade में से 15 Trade आपके Stoploss को Cover करने के लिए तथा 15 Trade आपका Total Trade पर लगने वाले Tax, Charge और Other Expense को Cover करने के लिए लग जाएगा। अब अंत में आपके पास कुल Profitable Trade 40 बचेंगे।

### 3. RRR Calculation 1:3 (70% Accuracy)




| | |
|---|---|
| Stoploss Hit | = 30 |
| Profitable Trade | = 70 |
| Recovery Trade | = 10 |
| Tax, Charges, Expense | = 10 |
| Profit | = 50 |

**Example :** यदि आपके Trade Setup की Accuracy 70% है और आपने Market में 100 Trade लिया जिसमें से 70 बार अपने Profit किया और 30 बार अपने Loss किया और यदि आपका Risk Reward Ratio 1:3 है। तब 70 Profitable Trade में से 10 Trade आपके Stoploss को Cover करने के लिए तथा 10 Trade आपका Total Trade पर लगने वाले Tax, Charge और Other Expense को Cover करने के लिए लग जाएगा। अब अंत में आपके पास कुल Profitable Trade 50 बचेंगे।

# Trading में Recovery Mathematics

Trading की दुनिया में, Capital वह कच्चा माल है, जिसके सहारे हम काम करते हैं। अगर आपके पास Trade करने के लिए Capital नहीं है तो आप पैसे कैसे कमाएंगे? इसलिए हमें अपने Profit को तो Save करना ही होता है, साथ में अपने Capital को भी Save करना होता है।

इसलिए अगर आप किसी Trade में बहुत ज्यादा Capital लगा रहे हैं, तो आप यह Risk ले रहे हैं कि आप अपनी ज्यादातर Capital को Loss कर बैठेंगे और हो सकता है कि अगली बार लगाने के लिए आपके पास बहुत ही कम Capital बचे। जब आप बहुत कम Capital से Market में Trade कर रहे होते हैं, तो हर Trade आपके लिए बहुत Risky हो जाता है। Loss होने पर वापस अपने पुरे Capital तक पहुंचने का काम काफी ज्यादा मुश्किल हो जाता है।

इस बात को समझाने के लिए मैंने एक Table बनाया है, जैसे अगर आपके पास Market में निवेश करने के लिए ₹100,000 का Capital है। अब देखते हैं कि हर नुकसान होने के बाद वापस पूंजी को लाने के लिए आपको कितना Profit कमाना होगा।

| Drawdown | Starting Capital | Efforts |
|---|---|---|
| 5% | 95000 | 5.3% |
| 10% | 90000 | 11.1% |
| 15% | 85000 | 17.6% |
| 20% | 80000 | 25% |
| 25% | 75000 | 33% |
| 30% | 70000 | 43% |
| 35% | 65000 | 54% |
| 40% | 60000 | 67% |
| 45% | 55000 | 82% |
| 50% | 50000 | 100% |
| 55% | 45000 | 122% |
| 60% | 40000 | 150% |
| 65% | 35000 | 186% |
| 70% | 30000 | 233% |
| 75% | 25000 | 300% |
| 80% | 20000 | 400% |
| 85% | 15000 | 567% |
| 90% | 10000 | 900% |
| 95% | 5000 | 1900% |

मान लीजिए आपने अपनी Capital का 5% यानी ₹5000 का नुकसान कर लिया। अब आपके पास शुरुआती Capital ₹95000 बचा है। अब आपको ₹5000 वापस लाने के लिए, इस ₹95000 पर 5.3% का Profit कमाना होगा यानी जितना Loss हुआ है उससे 0.3% ज्यादा।

अब मान लीजिए आपने 5% कि जगह 10% का Loss कर लिया है और आपकी Capital एक लाख के बजाय ₹90000 ही रह गई है। अब आप इस 10 हजार को वापस कमाने के लिए आपको 11.1% का Profit कमाना होगा। तो जैसा कि आप देख सकते हैं कि जैसे-जैसे आप का नुकसान बढ़ता जाता है, आपको पैसे Recover करने के लिए और अधिक Profit करनी पड़ती है, जिससे कि आप अपनी Capital को वापस ला सकें।

ऐसे में अब आप बड़े-बड़े Risk लेने लगेंगे, जिससे कि आप बड़ा Profit कमा सकें और अगर आपका एक भी Trade आपके Against चला गया, तो फिर आप Capital तो गंवाएंगे ही साथ में Recovery के लिए कोई रास्ता नहीं बचेगा।

- किसी भी Trading के लिए Position Sizing एक बहुत ही महत्वपूर्ण चीज होती है। Trading करने वालों पर Gambler's Fallacy (जुआरी का भ्रम) बहुत बड़ा असर डालता है। यह Trader को ये भरोसा दिलाता है, कि अब तक Market में उसके साथ जो हो रहा है वो अब बदलने वाला है।

- जब हम Market में लगातार Trade करते रहते हैं, तो हर Trade में Profit कमाने या Loss उठाने की संभावना उतनी ही होती है, जितनी पहले Trade में थी।

- Capital को Recover करना बहुत ही कठिन काम होता है।

- Small Capital वाले Trader हमेशा यह कोशिश करते हैं कि वह बड़े- बड़े Trade करें, जबकि ऐसा करना उनके लिए ठीक नहीं होता है।

# Fib Retracement क्या होता है ?

Fibonacci Retracement का विषय काफी Interesting है। यह Technical Analysis का एक तरीका है, जोकि एक Graph पर खींची जाने वाली रेखाओं का समूह होता है। इन रेखाओं से किसी Stock के संभावित Support और Resistance Level का पता चलता है।

Fib Retracement एक ऐसा tools है जो यह पहचान सकता है कि किस Level तक Retracement हो सकता है? ये Retracement Level Traders को Trend के Direction में नया Position बनाने का एक अच्छा अवसर प्रदान करते हैं।

यह Tools बहुत Usefull है, क्योंकि इसे किसी भी दो महत्वपूर्ण Price Point, जैसे High और Low के बीच खींचा जा सकता है। फिर यह Tools उन दो Points के बीच के Level निकाल देता है।

मान लीजिए किसी Share का Price ₹100 बढ़ जाता है और फिर ₹7.24 गिर जाता है, उस स्थिति में यह 7.24% वापस आ गया है, जो एक Fibonacci संख्या है। Fibonacci Number पूरे प्रकृति में पाई जाती हैं। इसलिए, कई Traders का मानना है कि इन संख्याओं का Financial Market में भी Relevance है।

Fibonacci Retracement, Stock Trading में Use किया जाने वाला एक Popular Tools है।

## Fibonacci Retracement से जुड़ी कुछ खास बातें:

- Fibonacci Retracement, Fibonacci Numbers और Golden Ratio पर आधारित होता है।
- Fibonacci Numbers में हर संख्या, अपने से पहले वाली दो संख्याओं का योग होता है।
- Fibonacci Retracement Level 23.6%, 38.2%, 50%, 61.8% और 78.6% शामिल हैं, जिसे Percentage पर Set किए जाते हैं।
- 38.2% Retracemet को Shallow Retracemet माना जाता है, जबकि 62.8% तक का Retracemet गहरा माना जाता है.

- Fibonacci Retracement का Use, किसी Stock के Price का Prediction करने या अनुमान लगाने के लिए किया जाता है।
- Fibonacci Retracement का Use, Stoploss Order देने और Target Price Set करने के लिए भी किया जाता है।
- दिए गए Percentage Level वह Area हैं, जहां Price रुक सकती है या Revers हो सकती है।
- Fibonacci Series में कई Mathematical Properties होते हैं। ये Mathematical Properties Nature के कई पहलुओं में पाए जाते हैं।
- इन Levels पर विशेष रूप से भरोसा नहीं किया जाना चाहिए, इसलिए यह मान लेना खतरनाक है कि एक विशिष्ट Fibonacci Level पर पहुंचने के बाद Price Revers हो जाएगी।



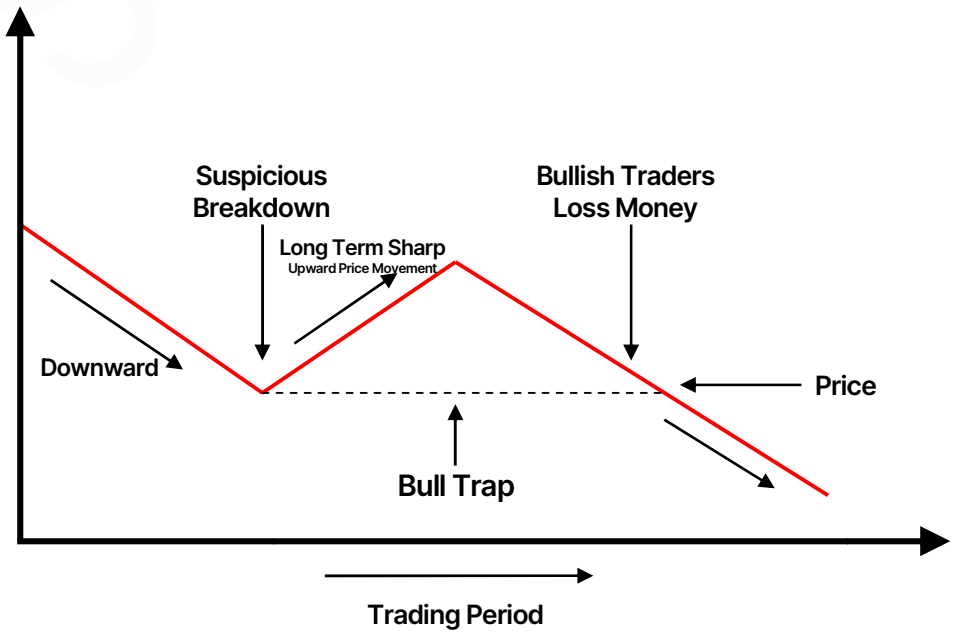
# Trap Trading क्या होता है?

Trading में Trap का मतलब है कि Price अचानक Reverse हो जाए और Trader Loss में फंस जाए। Trap Trading, Elusive Market Pattern को पहचानने और उनसे बचने की एक Strategy है। इसका मकसद, Loss से बचना और ज़्यादा से ज़्यादा Profit कमाना होता है। यदि आप Beginners हैं तो आपको Trending Chart को समझना मुश्किल हो सकता है लेकिन Experience और Market Indicator की मदद से आप सीखेंगे कि Trap की पहचान कैसे करें? Trap Trading दो प्रकार के होते हैं- Bull Trap और Bear Trap

**Bull Trap:** यदि Price नियमित Resistance Level से Increase होने में Fail रहता है, तो आप एक Bull Trap को देख सकते हैं। आम तौर पर, एक Real Bullish Market बिना किसी Problem के Resistance Line को पार कर जाता है। यदि Resistance Line टूटना अनिश्चित लगता है, तो इसे Warning Signal समझें।

- Bull Trap तब होता है, जब Price तेज़ी से बढ़ने के बाद अचानक गिर जाती हैं।
- यह Pattern अक्सर पिछले High Level के आस-पास होता है।
- Bull Trap, तब होता है जब Price अस्थायी रूप से Resistance Level से उपर आ जाता हैं।
- Bull Trap में, Market में Up Trend का Signal दिखाई दे सकता है, जैसे कि बढ़ते Price और High Trading Volume, इससे यह गलत धारणा बनती है कि Price बढ़ती रहेंगी।
- Bull Trap में, Investor को आशावाद (Hope) की झूठी भावना पैदा होती है।

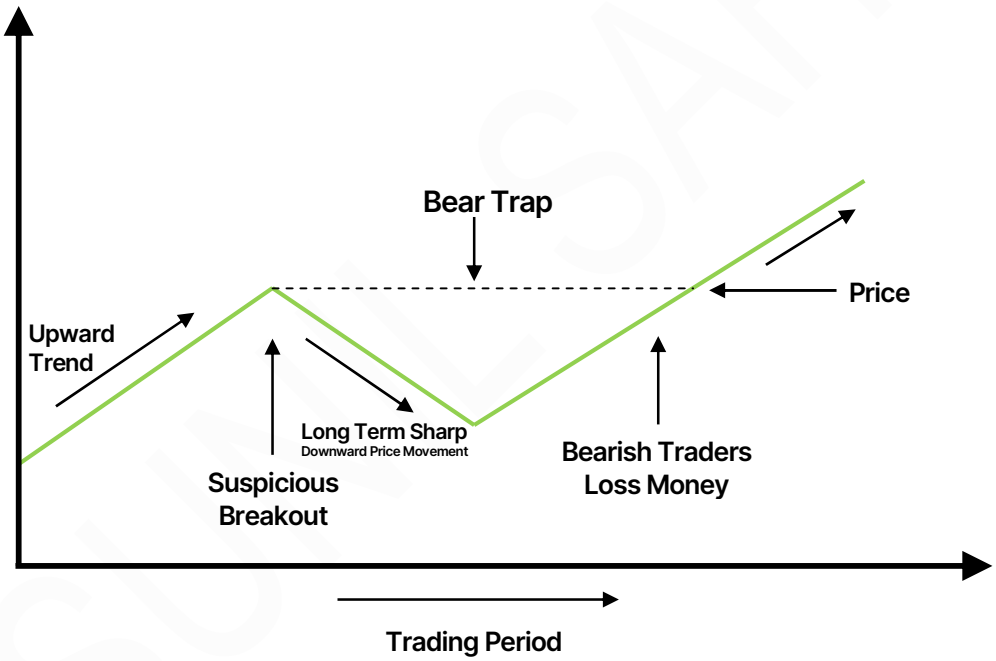
BULL TRAP



**Bear Trap :** Bear Trap एक गलत Signal है, जो यह संकेत देता है कि Market में Bearish Trend Reverse होने पर भी जारी रहेगा। इस गलत Signal पर काम करने वाले Trader अक्सर कम Price पर Shares बेचते हैं, लेकिन कुछ ही समय बाद Price बढ़ता हुआ देखने को मिलता है।

- Bear Trap, तब होता है जब Price अस्थायी रूप से Support Level से नीचे आ जाती हैं।
- Bear Trap में, Market में गिरावट का Signal दिखाई दे सकता हैं, जैसे कि Price में गिरावट और कम Trading Value, इससे यह गलत धारणा बनती है कि Price गिरती रहेंगी।
- यह Market में Bearish Trend की शुरुआत का Signal देता है।
- Bear Trap में, Trader Short Selling करते हैं।

**BEAR TRAP**




**Trap Trading से बचने के लिए, इन बातों का ध्यान रखना चाहिए:**

- Emotions के प्रभाव पर नियंत्रण रखना चाहिए।
- Long Term Approach बनाए रखना चाहिए।
- Stoploss का Use करना चाहिए।
- RSI, Moving Average जैसे Signals का Use करना चाहिए।
- आपको पहले से Bear Trap की पहचान करने के लिए Technical Analysis जरुर करना चाहिए।

# Indicators कैसे Use करें ?

यदि आप किसी Trader के Trading Terminal पर Stock Chart को देखते हैं, तो आपको Chart पर कई तरह की Lines दिखाई देंगी। इन Lines को 'Technical Indicators" कहा जाता है। Technical Indicators एक Trader को Stock के Price में हो रहे Changes का Analysis करने में मदद करता है।

Technical Indicators एक स्वतंत्र Trading System है, जो दुनिया के सफल Traders ने बनाया है। Technical Indicators एक Pre-set Logic पर बनाए गए हैं, जिनका उपयोग करके एक Trader अपने Technical Analysis (Candlestick,Volume, Support & Resistance) को और मजबूत कर सकता है। Indicators Trading से जुड़े Decisions जैसे - Buying, Selling, Trade Confirmation और कभी-कभी Trade Prediction करने में मदद करता है।

Technical Indicators "Leading और Lagging" दो प्रकार के होते हैं। एक Leading Indicators Price के आगे चलता है, जिसका अर्थ है कि आम तौर पर यह पहले से ही Trend में Reversal या एक नए Trend के बनने का Signal दे देता है। ये लगता बहुत Interesting है, लेकिन यहाँ आपको ध्यान देना चाहिए कि सभी Leading Indicators Correct नहीं होते हैं। अधिकांश Leading Indicators को Oscillators कहा जाता है, क्योंकि वे एक तय सीमा के अन्दर ही इधर-उधर घूमा करते हैं। आमतौर पर एक Oscillators दो Price के बीच ही रहता है। सबसे Popular Leading Indicators में से एक है- RSI.....।

दूसरी ओर एक Lagging Indicator Price के पीछे चलता है। इसका अर्थ यह है कि आमतौर पर यह Trend Reversal या एक नए Trend के घटित होने के बाद संकेत देता है। आप सोच सकते हैं कि घटना घटने के बाद Signal मिलने का क्या फायदा होगा? खैर, Signal ना मिलने से कहीं बेहतर है बाद में Signal मिल जाना। सबसे Popular Lagging Indicators में से एक है- Moving Average.....।

**1. RSI Indicator :** Relative Strength Index (RSI), यह एक काफी Popular Technical Indicator है। यह किसी Stock या Asset के Price में Changes की मात्रा को मापता है। RSI की मदद से, किसी Stock के Overbought या Oversold होने का पता चलता है। RSI

की मदद से, Market की गति को समझा जा सकता है। RSI को एक Oscillator की तरह दिखाया जाता है, इसकी Reading 0 से 100 के बीच होती है।

RSI का Use, Intraday Trending में किसी Stock के Price में उतार-चढ़ाव को मापने के लिए किया जाता है। अगर किसी Stock का RSI 30 से कम है, तो इसका मतलब है कि वह Oversold है और अगर किसी Stock का RSI 70 या उससे ज़्यादा है, तो Stock भारी मात्रा में खरीदा जा चुका है यानी कि वह Overbought है और यह नीचे की ओर Correction कर सकता है।

अंत में, याद रखें कि Trader अक्सर RSI का उपयोग अकेले नहीं करते हैं, Market का Analysis करने के लिए इसका उपयोग दूसरे Candlestick Pattern और Indicators के साथ किया जाता है।




**2. Moving Average Indicator (SMA) :** Moving Average Indicator इसे Simple Moving Average भी कहा जाता है। किसी Stock या Index के पिछले Price के आधार पर उसके Trend का पता लगाने का एक तरीका है, इसे Lagging Indicator भी कहा जाता है। यह एक Technical Indicator है जिसका Use Share Market में भविष्य के Stock Price Trend को प्लॉट करने के लिए किया जाता है। यह Price Chart पर Noise को कम करता है। यह Price के Direction का पता लगाने में मदद करता है और Support या Resistance के रूप में काम करता है, साथ ही यह Trader को Normal Direction में Trade करने में मदद करता है अगर यह ऊपर की ओर झुका हुआ है, तो Price ऊपर की ओर बढ़ रहा है और अगर यह नीचे की ओर झुका हुआ है, तो Price नीचे की ओर गिर रहा है।

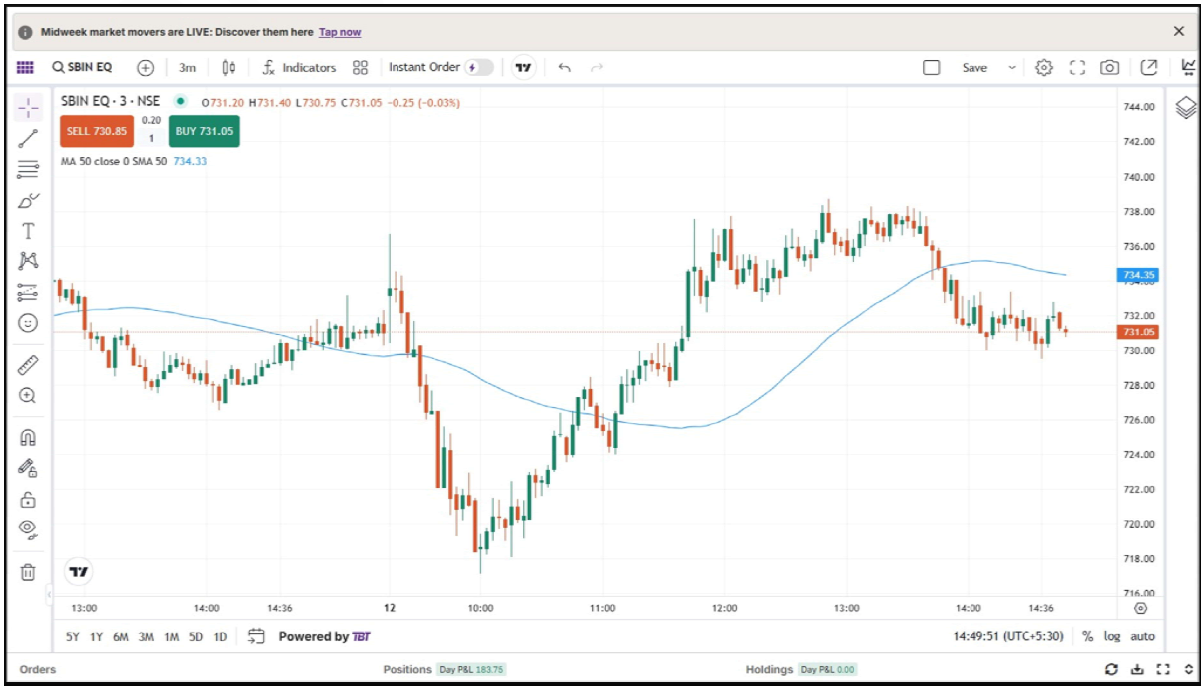
Moving Average का उपयोग सही मौके पर Stock को खरीदने और बेचने के लिए किया जा सकता है। जब Stock Price अपने Average Price से ऊपर Trade करता है, तो इसका मतलब है कि Trader Stock को उसकी Average Price से अधिक Price पर खरीदने के लिए तैयार हैं। इसका मतलब यह है कि Trader को उम्मीद है कि Stock का Price बढ़ेगा, इसलिए ऐसे Time पर खरीदने पर ध्यान देना चाहिए।

इसी तरह, जब Stock Price अपने Average Price से नीचे Trade करता है, तो इसका मतलब है कि Trader अपने Average Price से कम Price पर Stock Selling के लिए तैयार हैं। यानी कि Trader मानते हैं कि Stock का Price और नीचे जा सकता है, इसलिए ऐसे Time पर Sell करने में ध्यान देना चाहिए।

Moving Average का Calculation मिनट, घंटा, दिन, महीना से लेकर साल तक के किसी भी Time Frame में किया जा सकता है। अपनी आवश्यकताओं के आधार पर Charting Software से किसी भी Time Frame का Selection किया जा सकता है।

यदि हम 5 दिनों का Data लेकर Moving Average निकलते हैं, तो इसे 5 दिन का SMA कहा जायगा। 5 दिन के इस Average (या यह 5, 10, 50, 100, 200 दिनों की तरह कुछ भी हो सकता है) को एक Line से जोड़ा जाता है जिसे Moving Average Line कहते हैं।

नीचे दिखाए गए Chart में, मैंने SBIN के Candlestick Graph पर 50 दिन का SMA बनाया है।



**Exponential Moving Average (EMA) :** जब कोई कुछ अलग अलग Numbers पर Average का Calculation करता है। तो एक Imagination की जाती है कि प्रत्येक Data Number का महत्व एक समान है, जबकि ऐसा नहीं है। संख्याओं के महत्व या Weightage के आधार पर किये गये Calculation से प्राप्त Average हमें Exponential Moving Average (EMA) प्रदान करती है।




यहाँ SBIN का एक Chart है। मैंने SBIN के Closing Price पर एक 50 दिन का SMA (Blue) और 50 दिन का EMA (Red) Apply किया है। यहाँ पर SMA और EMA दोनों 50 दिन के लिए हैं, लेकिन फिर भी आप देख सकते हैं कि EMA, Price से अधिक प्रभावित हो रहा है और इसलिए यह Price के ज्यादा नजदीक है।

EMA, Current Market Price पर सबसे तेज Response दिखाता है, क्योंकि EMA सबसे नए Data Point को अधिक महत्व देता है। EMA Trader को जल्दी फैसला लेने में मदद करता है। इसलिए, Trader SMA के बजाय EMA को Priority देते हैं।

**Moving Average Crossover :** Moving Average System के साथ समस्या यह है कि यह एक Sideways Market में बहुत अधिक Trading Signal Generate करता है वहीं Moving Average Crossover, Moving Average पर एक सुधार है। यह Trader को एक Sideways Market में कम Trade Signal देता है।

Moving Average Crossover में, Trader एक Moving Average के बजाय दो Moving Average के Average को Calculate करते हैं। इसे आमतौर पर Smoothing कहा जाता है।

इसका एक Specific Example 100 दिन के EMA के साथ 50 दिन के EMA को जोड़ना होता है। छोटे Moving Average (इस मामले में 50 दिन) को Faster Moving Average भी कहा जाता है, जबकि लंबे Moving Average (100 दिन) को Slower Moving Average कहते हैं।

छोटे Moving Average का Calculation करने के लिए Data Point की संख्या कम होती है और इसलिए यह Current Market Price के नजदीक रहती है और अधिक तेज़ी से Response करता है। लंबे Moving Average का गणना करने के लिए अधिक संख्या में Data Point होते हैं और इसलिए यह Current Market Price से दूर रहता है, जिससे इसमें Response Slow होता हैं।

यहां Reliance Industries का Chart है, जो आपको दिखा रहा है कि Chart पर Load होने के बाद दो Moving Average कैसे काम करते हैं?




जैसा कि आप देख सकते हैं कि 50 दिन की EMA को दिखाने वाली Red Line Current Market Price के नजदीक है (यह तेजी से Response करता है) जबकि 100 दिन EMA (इसकी Response धीमी होती है) को दिखाने वाली Green Line इससे कुछ दूर है।

**Crossover के लिए Entry और Exit नियम निम्नानुसार हैं:-**

**1st नियम-** जब Short Term Moving Average, किसी Long Term Moving Average से अधिक हो जाती है तो Trader को खरीदना (New Long Position) चाहिए। इस Trade में तब तक रहें, जब तक यह Situation बनी रहे।

**2nd नियम -** जब Short Term Moving Average किसी Stock में Long Term Moving Average से कम हो जाती है, तो Long Trade से Exit हो जाना (Position Square-Off) चाहिए।

एक Trader Crossover System पर SMA Crossover बनाने के लिए किसी भी Combination का उपयोग कर सकता है। Swing Trader के लिए कुछ Popular Combination यह हैं:

- 9 दिन EMA को 20 दिन EMA के साथ - Short Term के Trade के लिए इसका उपयोग करें (कुछ Trading Time तक)
- 20 दिन EMA और 50 दिन EMA एक साथ Medium Term के Trade (कुछ Week तक) की पहचान करने के लिए इसका उपयोग करें।
- 50 दिन EMA 100 दिन EMA के साथ - कुछ महीनों तक चलने वाले Trades की पहचान करने के लिए इसका उपयोग करें।
- 50 दिन EMA के साथ 200 दिन EMA Long Term (Investing Opportunity) की पहचान करने के लिए इसका उपयोग करें, उनमें से कुछ एक वर्ष या उससे अधिक समय तक भी रह सकते हैं।

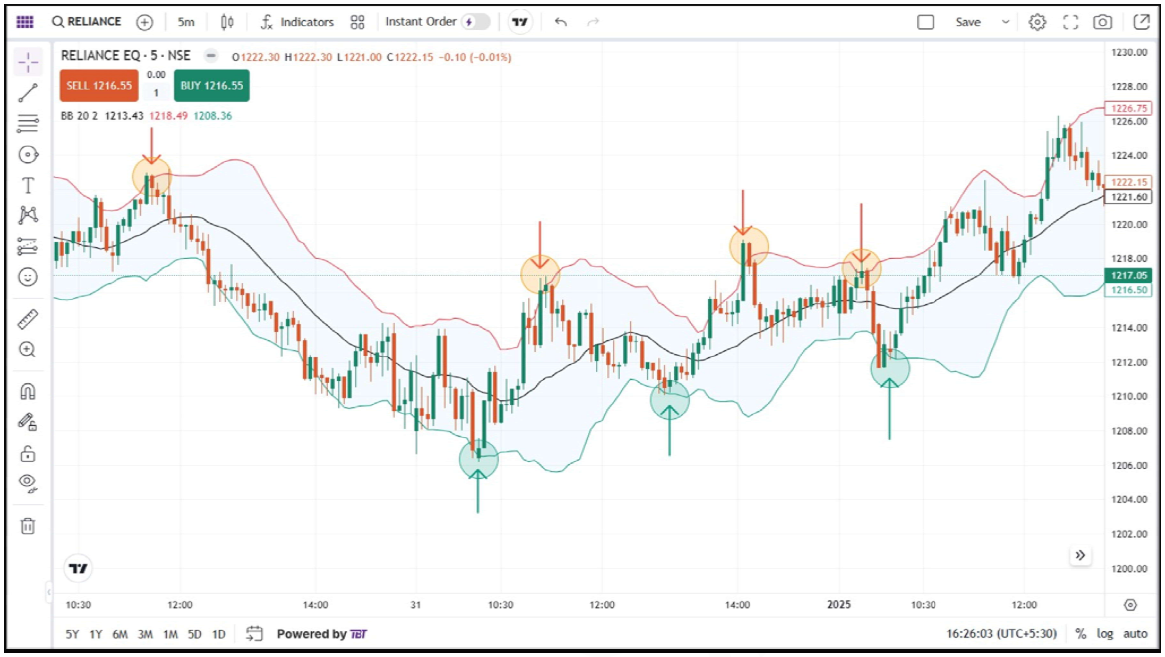
**3. The Bollinger Bands :** Bollinger Bands (BB) संभवतः Technical Analysis में उपयोग किए जाने वाले सबसे Useful Indicators में से एक है। BB का उपयोग Overbought और Oversold Level को Fix करने के लिए किया जाता है, जहां एक Price Band के Upper Level पर Trader बेचने की कोशिश करेगा और जब Price उसी Band के Lower Level पर पहुंचती है तो Trader खरीदने की कोशिश करेगा।

Bollinger Bands के 3 Component हैं:

- मध्य रेखा (Middle Line), जो Closing Price का 20 दिन का Simple Moving Average है।

- एक Upper Band - यह Middle Line का +2 Standard Deviation है।
- एक Lower Band - यह Middle Line का -2 Standard Deviation है।

Upper और Lower Band Trade शुरू करने के लिए एक Trigger के रूप में कार्य करते हैं। नीचे Reliance Industries Limited का Chart है:




बीच का Black Line 20 दिन की SMA (Simple Moving Average) है। Black की तरह ऊपर Red और नीचे Green Line +2 SD और -2 SD हैं। जब Stock का Price ऊपरी Band को छूती है तो इस उम्मीद के साथ Short करना चाहिए कि यह Average Price पर वापस आ जाएगी। इसी तरह जब Price Lower Band को छूती है, तो Long जा सकते है और ये उम्मीद रखनी चाहिए कि यह Average पर वापस आ सकती है।

Bollinger Bands का Upper और Lower Band एक साथ मिलकर Envelope बनाते हैं। Envelope का Expense तब होता है जब Price एक Particular Direction में मजबूत Momentum का Signal देती है। एक Envelope Expansion होने पर BB का Signal Fail हो जाता है। इससे एक महत्वपूर्ण Conclusion निकलता है कि Sideways Market में BB अच्छी तरह से काम करता है, और एक Trend वाले Market में Fail रहता है।

Individual रूप से मैं जब भी BB का उपयोग करता हूं, तो उम्मीद करता हूं कि Trade तुरंत मेरे Favor में Result दिखाना शुरू कर देगा। यदि ऐसा नहीं होता है, तो मैं देखना शुरू कर देता हूं, कि कहीं Envelope Expansion तो नहीं हो रहा है।

# Strike Price Select कैसे करें?

दोस्तों आप जब भी Trade करने जाते हैं और Option Chain Open करते हैं तो आप में से बहुत सारे नये Traders इस बात को लेकर Confuse हो जाते हैं, कि हमें कौन से Strike Price पर Trade करना चाहिए? हमने पढ़ा है कि Strike Price 3 प्रकार के "ATM, ITM और OTM" होते हैं, तो इनमें से कौन अच्छा है? Option Buyers को किसमें Trade करना चाहिए? Option Seller को किसमें Trade करना चाहिए? इस Article में हम इन सभी के बारे में जानेंगे।

**ITM:** यह Strike Price Option Buying के लिए सबसे अच्छा माना जाता है क्योंकि यहाँ पर Delta का Value 0.5 से अधिक होता है जो कि Index या Stocks के Movement के साथ Premium को तेज़ी से बढाने में मदद करता है। यहाँ पर Time Decay का प्रभाव भी बहुत कम होता है, लेकिन यहाँ पर Fund का Requirement बहुत अधिक होता है। यदि आपके पास Capital पर्याप्त है, तो ITM में ही Trade करना चाहिए।

**ATM:** यह Strike Price भी Option Buying के लिए अच्छा माना जाता है क्योंकि यहाँ पर Delta का Value लगभग 0.5 के आस-पास होता है जो कि Index या Stocks के Movement के साथ Premium को बढाने में मदद करता है और यहाँ पर Time Decay का प्रभाव कम होता है साथ ही यहाँ पर Fund का Requirement ITM कि तुलना में कम होता है, अगर आपके पास ITM में Trade करने के लिए Sufficient Fund नहीं है तो आप ATM पर Trade कर सकते हैं।

**OTM:** यह Strike Price Option Buying के लिए अच्छा नहीं माना जाता है, क्योंकि यहाँ पर Delta का Value 0.5 से कम होता है इसलिए Index / Stock के Movement के साथ Premium में कोई ज्यादा बदलाव नहीं होता है और यहाँ पर Time Decay का प्रभाव बहुत अधिक होता है, जिससे Option Sellers को Premium मिलता है और Buyers को नुकसान होता है। यहाँ पर Fund का Requirement ITM और ATM कि तुलना में कम तो होता है लेकिन यहां पर Loss होने कि संभावना अधिक होती हैं। इसलिए हमें इसमें Trade नहीं करना चाहिए।

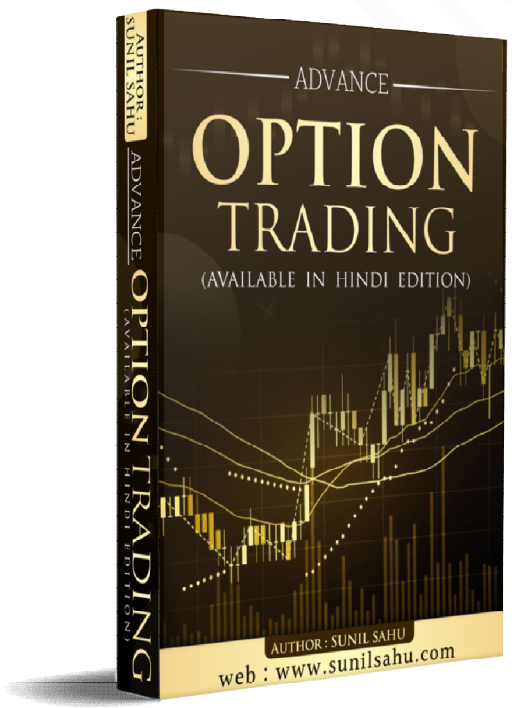
**Options Greeks** – जैसे Delta, Gamma, Theta और Vega ये सब इस बारे में जानकारी देते हैं कि किसी Option का Price अलग-अलग चीजों पर निर्भर करता है, जैसे कि Price Movement, Volatility और Time Decay, यह कैसे बदलते हैं?

Example : Delta, Underlying Asset's के Movement के लिए Option's के Price की Sensitivity को मापता है, जो Strike Price Select करने में मदद करता है। Gamma, Delta में परिवर्तन की दर को दर्शाता है, Theta, Time Decay को दर्शाता है, जबकि Vega Market कि Volatility को मापता है। जो Traders समझते हैं कि ये Greeks कैसे काम करते हैं? वे अपना सही Strike Price Select करने और अपने Risk को Manage करने के लिए उनका उपयोग करते हैं।

---

मुझे पूरा उम्मीद है कि इस E-Book को अंत तक अच्छे से पढ़ने के बाद, आपको Basic Option Trading के बारे में सब-कुछ समझ आ गया होगा।

अगर आप Option Trading को गहराई से सीखना चाहते हो, जिससे आप एक Successfull Trader बन सको, इसके लिए आपको कुछ Trading Rules को Follow करना पड़ेगा, इसलिए मैं आपको Recommend करना चाहूँगा "40 Share Market Trading Tips" का एक E-Book, जिसे आप पढ़ करके Trading Rules को सीख सकते हो और साथ ही Advance Option Trading सिखने के लिए, आप हमारा दूसरा "Adavance Option Trading E-Book" भी पढ़ सकते हो। इसमें आपको Option Trading से Releted सारे Important Topics मिल जायेंगे, जो आपके Trading Journey में काफी Help करेगा और आपको Guide करेगा, धन्यवाद.....!




BUY NOW

